हिंदी

व्याकरण एवं रचना

5

With the blessings of :
Our Parents

हिंदी
व्याकरण एवं रचना
5

Copyright@Publishers

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without prior permission in written. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Limits of liability and Disclaimer of Warranty:

The Author, Editor, Designer and the Publisher of this book have tried their best to ensure that all the texts are correct in all respect. However, the author and the publisher does not take any responsibility of any mistake, if happened. The correction of mistakes, if found will duly be done in the next edition.

MADE IN INDIA

Support Recycle

Save a Tree
Save the Earth

One Ton of this Paper Saves 17 trees

Max Retail Price: On Back Cover

Edited by:
Editone International Pvt. Ltd.

Based on:

- National Education Policy 2020
- NCF 2022
- Activity Based Format
- Innovative Approach
- Learning with fun
- Eco Friendly Paper

आमुख

भाषा को समझने हेतु व्याकरण एक मजबूत कड़ी है। बिना व्याकरण को समझे हम भाषा को सरल एवं स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते। इसी को ध्यान में रखते हुए 'हिंदी व्याकरण एवं रचना' (कक्षा 1 से 8) तैयार की गई है।

इस शृंखला में नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख मापदंडों का बड़ी सटीकता से पालन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित इस पुस्तक में व्याकरण की प्रमुख इकाइयों को बड़े ही सरल, सहज एवं रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस शृंखला में व्याकरण को चित्रों के माध्यम से बड़े ही सहज भाव से तैयार किया गया है ताकि बच्चों को व्याकरण की जटिलता का तनिक भी आभास न हो।

पाठ के प्रस्तुतीकरण में शामिल 'पढ़िए और समझिए' के द्वारा बच्चों को चित्रों के माध्यम से संपूर्ण अध्याय को सरल एवं सहज रूप से समझाने का प्रयास किया गया है ताकि बच्चों का पाठ से जुड़ाव आसानी से हो सके। पाठ में शामिल 'अध्यापन संकेत' हमारा एक छोटा-सा प्रयत्न है जिसके माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

पाठ में शामिल 'आइए, पुनरावृति करें' के माध्यम से सीखे गए बिंदुओं को दोहराया गया है। अभ्यास कार्य के अंतर्गत शामिल 'मौखिक' और 'लेखन कार्य' के द्वारा बच्चों के श्रवण कौशल, बौद्धिक क्षमता और लेखन-शैली पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही, 'सोचें-विचारें' के द्वारा बच्चों की रचनात्मक, कार्यात्मक एवं तार्किक क्षमता को निखारने की कोशिश की गई है। 'खेल-खेल में' बच्चों की प्रतिभा को उभारने का संकल्प लिया गया है। साथ ही उनकी मानसिक योग्यता को बल प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। 'प्रेरणादायक मूल्य' को संपूर्ण शृंखला में शामिल करने का मूल उद्देश्य बच्चों में नैतिक गुणों को प्रभावी स्वरूप प्रदान करना है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह शृंखला बच्चों में भाषा को रचनात्मक स्वरूप प्रदान करेगी और उनके बौद्धिक व व्यवहार रूपी अधिगम क्षमता को बढ़ाएगी। आपके सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाओं सहित.....

—प्रकाशक

पाठ्यपुस्तक का परिचय

'पढ़िए और समझिए' के माध्यम से पाठ में अंतर्निहित बातों को सरल तरीके से चित्रों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

'आइए, पुनरावृति करें' के द्वारा पाठ में सम्मिलित प्रमुख बातों, विचारों तथा तथ्यों को पुन: दोहराया गया है ताकि विद्यार्थी पाठ में सीखे गए बातों को कंठस्थ कर सकें।

'अध्यापन संकेत' एक सम्मिलित प्रयास है जिससे शिक्षक, लेखक के द्वारा दी गई प्रमुख सूचनाओं को आधार बनाकर कक्षा में पठन-पाठन को विद्यार्थियों के लिए बेहतर बना सकें ताकि स्तरानुकूल पढ़ाई का एक मंच तैयार हो सके।

'अभ्यास कार्य' के अंतर्गत शामिल प्रश्नों के महत्वपूर्ण समुच्चय के द्वारा विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण कौशलों के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता को भी प्रभावी रूप देने का प्रयास किया गया है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य — Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मनुष्य को भाषा की आवश्यकता क्यों है?

(ख) भाषा के किस रूप का प्रचलन सबसे पहले हुआ?

(ग) क्या सांकेतिक भाषा को मान्यता प्राप्त है? बताइए।

(घ) साहित्य के कितने प्रकार हैं?

लेखन कार्य — Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा से आप क्या समझते हैं? भाषा और बोली में क्या अंतर है? लिखिए।

(ख) मातृभाषा से क्या तात्पर्य है? बच्चा यह भाषा कहाँ से सीखता है?

(ग) लिपि से आप क्या समझते हैं?

(घ) हमें व्याकरण की आवश्यकता क्यों होती है?

2. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) मूक भाषा आज भी प्रचलित है।

(ख) भारतीय संविधान में केवल 15 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।

(ग) भाषा के केवल लिखित और मौखिक रूप को ही मान्यता प्राप्त है।

(घ) बोली का अपना कोई साहित्य नहीं होता।

(ङ) साहित्य संचय का माध्यम भाषा का लिखित रूप है।

3. सही मिलान कीजिए।

(क) भाषा में एकरूपता लाना	(i) हिंदी एवं अंग्रेज़ी
(ख) मराठी भाषा की लिपि	(ii) मातृभाषा
(ग) राष्ट्र के कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा	(iii) देवनागरी
(घ) बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली प्रथम भाषा	(iv) मानक भाषा

11

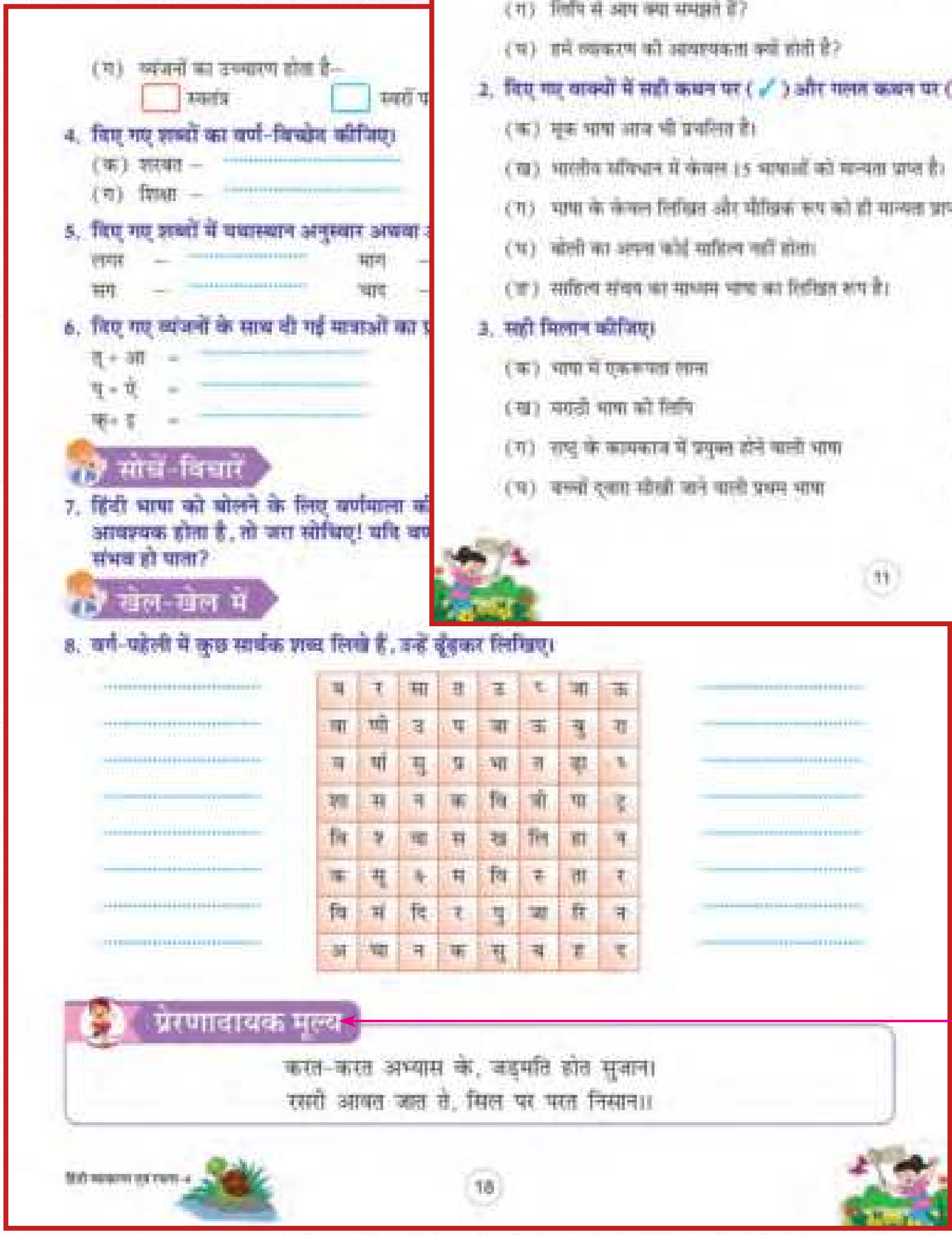

(ग) व्यंजनों का उच्चारण होता है–

स्वतंत्र ... स्वरों प...

4. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) शरबत – ....

(ग) शिक्षा – ....

5. दिए गए शब्दों में यथास्थान अनुस्वार अथवा ...

5. दिए गए शब्दों में यथास्थान अनुस्वार अथवा ...

सोचें-विचारें

7. हिंदी भाषा को बोलने के लिए वर्णमाला का ... आवश्यक होता है, तो ज़रा सोचिए! यदि ... संभव हो पाता?

खेल-खेल में

8. वर्ग-पहेली में कुछ सार्थक शब्द लिखे हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए।

प्रेरणादायक मूल्य

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

16

'प्रेरणादायक मूल्य' के द्वारा बच्चों में नैतिक गुणों के प्रसार का प्रयास किया गया है ताकि बच्चे उन मूल्यों को अपनाकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा, रूप तथा इकाइयाँ (Language, Form and Unit)	7
2.	वर्ण विचार (Phonology)	13
3.	शब्द-विचार (Morphology)	19
4.	वाक्य (Sentence)	23
5.	संज्ञा (Noun)	28
6.	लिंग (Gender)	32
7.	वचन (Number)	36
8.	सर्वनाम (Pronoun)	40
9.	विशेषण (Adjective)	45
10.	क्रिया (Verb)	52
11.	काल और अव्यय (Tense and indeclinable Words)	56
12.	कारक (Case)	67
13.	शब्द-भंडार (Vocabulary)	70
14.	विराम-चिह्न (Punctuation-Marks)	79
15.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	83
16.	अपठित गद्यांश (Unseen Passage)	89
17.	संवाद-लेखन (Dialogue Writing)	93
18.	पत्र-लेखन (Letter Writing)	95
19.	अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing)	98
20.	निबंध-लेखन (Essay Writing)	101
21.	कहानी-लेखन (Story Writing)	108
22.	चित्र-वर्णन (Picture Description)	114
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	117
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	119

अध्याय 1

भाषा रूप तथा इकाइयाँ (Language: Form and Unit)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! पिछले अध्याय में हम भाषा, बोली तथा लिपि आदि के विषय में पढ़ चुके हैं। अतः हमें ज्ञात हो चुका है कि बोली और उपभाषा से भाषा का स्थान ऊँचा होता है।

इस कक्षा में हम भाषा को और विस्तारपूर्वक जानने का प्रयास करेंगे।

भाषा की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह अपने इसी गुण को स्पष्ट करते हुए परिवार एवं समाज के मध्य रहता है। जब वह किसी समाज में रहता है, तो निश्चित है कि उसे बातचीत करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए जो साधन है वह संकेतों, अस्पष्ट ध्वनियों आदि की यात्रा तय करते-करते अब शुद्ध और परिमार्जित रूप में भाषा तक पहुँच गया है।

भाषा का इतिहास

बच्चो, आपने इतिहास में आदिमानव के विषय में पढ़ा होगा। वह मूलतः एक चौपाया जीव था तथा अस्पष्ट ध्वनियों और विभिन्न शारीरिक भावों के द्वारा अपनी बात को समझाता था। धीरे-धीरे उसका शारीरिक विकास हुआ, फिर वह अपने दो पाँवों को बाँहों की तरह प्रयोग करने लगा, उसके मस्तिष्क का विकास हुआ। वह आसपास घटनेवाली घटनाओं को समझने लगा, उसकी ध्वनियाँ स्पष्ट हुईं और वह बोलने लगा। वह स्वयं को अन्य जीवों से ऊँचा मानने लगा। अब वह अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में लग गया और उसे अधिक स्पष्ट और सुचारू भाषा की आवश्यकता पड़ने लगी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वह विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बोलने लगा।

अभी तक मनुष्य के पास भाषा के नाम पर केवल दो साधन थे– 1. सांकेतिक भाषा 2. मौखिक भाषा। परंतु जब वह निरंतर विकास की राह पर बढ़ता गया, तो उसका काम केवल इन दो भाषायी साधनों पर निर्भर रहना असंभव होने लगा। अब उसे लिखने की आवश्यकता महसूस होने लगी। मानव ने स्वयं ही मौखिक ध्वनियों के लिए लिखित चिह्न बना लिए और इस प्रकार तीसरा महत्वपूर्ण रूप लिखित भाषा का विकास हुआ।

अतः–

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचार, शब्दों को लिखित रूप में दूसरों तक पहुँचा सकते हैं और स्वयं समझ सकते हैं।

इस प्रकार भाषा के तीन रूप विकसित हुए–

1. मूक अथवा सांकेतिक स्वरूप, 2. मौखिक भाषा, 3. लिखित भाषा

1. **मूक अथवा सांकेतिक स्वरूप–** भाषा के इस रूप में केवल शारीरिक गतिविधियों से अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाया जाता है। आज भी इस रूप का प्रयोग होता है; जैसे– शिक्षक पढ़ाते समय, गूँगे व्यक्ति अथवा किसी क्षेत्र की भाषा न जानने वाले, चौराहे पर खड़ा यातायात नियंत्रण करने वाला पुलिस अधिकारी इत्यादि। अतः

मुख, हाथ तथा नेत्रों आदि के द्वारा अपनी बातों को दूसरे तक पहुँचाना मूल भाषा अथवा सांकेतिक स्वरूप कहलाता है।

2. **मौखिक भाषा–** जब दो व्यक्ति परस्पर बात करते हैं, तो वह मुख से बोले गए शब्दों का प्रयोग करके विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं। ये शब्द छोटी-छोटी ध्वनियों के परस्पर मेल से बने होते हैं। भाषा का यह रूप मौखिक रूप (मौखिक भाषा) कहलाता है। अतः

अपने शब्दों को मुख से बोलकर विचारों के माध्यम से प्रकट करने की विधि मौखिक भाषा कहलाती है।

3. **लिखित भाषा–** उन्नति के पथ पर लगातार अग्रसर होने के कारण मानव ने धीरे-धीरे बोली जाने वाली ध्वनियों के लिए लिखित चिह्न बना लिए। इन चिह्नों का प्रयोग करके बोले जाने वाले शब्द लिखे जाने लगे। दूर बैठे व्यक्तियों को संदेश आदि भेजने के लिए इस लिखित प्रणाली का प्रयोग होने लगा। भाषा का यह रूप लिखित भाषा कहलाया। अतः

अपने लिखे हुए शब्दों को उचित रूप से प्रयोग करके ध्वनि चिह्नों के माध्यम से प्रकट करने की विधि को लिखित भाषा कहते हैं।

- **मातृभाषा–** बालक जिस परिवार में जन्म लेता है, वह सर्वप्रथम उसी भाषा को सीखता है। अतः अपने परिवार द्वारा बोली जाने वाली जिस भाषा को बच्चा सीखता और बोलता है, उसे 'मातृभाषा' कहते हैं।
- **राष्ट्रभाषा–** जिस भाषा का प्रयोग राष्ट्र के अधिकांश भू-भाग पर बोलने व समझने के लिए किया जाता है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं।

- **राजभाषा–** जिस भाषा का प्रयोग देश के राजकाज और कार्यालयों आदि में किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं। भारत-वर्ष में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में राजकाज और कार्यालयी कार्य किए जाते हैं। लेकिन हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।
- **अंतरराष्ट्रीय भाषा–** कुछ भाषाएँ अपने देश के अलावा भी दूर-दूर तक प्रयोग की जाती हैं। उन्हें बाहरी देशों के लोग भी अपना लेते हैं। ऐसी भाषाओं को अंतरराष्ट्रीय भाषा कहते हैं; जैसे- अंग्रेज़ी भाषा इंग्लैंड के बाहर भी लगभग सभी देशों में बोली जाती है। अत: यह अंतरराष्ट्रीय भाषा है।
- **मानक भाषा–** विभिन्न भाषाविदों के द्वारा भाषा को एक रूप देने के लिए जिस रूप को प्रधानता दी जाती है, उसे भाषा का मानक रूप कहा जाता है; जैसे- गङ्गा – गंगा, अन्दर – अंदर आदि।
- **बोली और भाषा में अंतर–** भाषा के अल्पविकसित रूप को बोली कहा जाता है। भाषा का प्रयोग जहाँ व्यापक स्तर पर होता है, वहीं बोली का प्रयोग सीमित क्षेत्र में होता है। भाषा के भेद होते हैं, जबकि बोली का कोई रूप नहीं होता। भाषा में साहित्य-सृजन होता है, जबकि बोली में साहित्य-सृजन नहीं होता, जो केवल मौखिक रूप होता है। भारत-वर्ष में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।

भारत की मान्यता प्राप्त भाषाएँ

हिंदी	असमिया	बांग्ला	डोगरी	बोडो	उर्दू
नेपाली	गुजराती	कन्नड़	कश्मीरी	कोंकणी	मैथिली
मलयालम	मराठी	मणिपुरी	उड़िया	पंजाबी	संस्कृत
संथाली	सिंधी	तमिल	तेलुगू		

लिपि– मुख से जो ध्वनियाँ निकलती हैं, उन्हें लिखित रूप देने के लिए जो चिह्न निश्चित किए गए हैं, इन चिह्नों को वर्ण कहते हैं। इन वर्णों को लिखने की विधि लिपि कहलाती है। अत:

मुख से बोलते समय निकलने वाली ध्वनियों को लिखने की विधा में लिपि कहा जाता है।

भाषाएँ और उनकी लिपियाँ

भाषा	लिपि
संस्कृत	देवनागरी
उर्दू	फारसी

भाषा	लिपि
बांग्ला	बांग्ला
मराठी	देवनागरी

भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी
अंग्रेज़ी	रोमन

गुजराती	देवनागरी
फ्रांसीसी	रोमन

जर्मन	रोमन
पंजाबी	गुरुमुखी

नेपाली	देवनागरी
रूसी	सिरिलिक

साहित्य– भाषा के विभिन्न विचार एवं सूचनाओं के लिखित रूप के संचित कोष को साहित्य कहा जाता है। साहित्य के माध्यम से लिखित रचनाओं को सँजोकर रखते हैं।

साहित्य के प्रकार

गद्य साहित्य | पद्य साहित्य

- **गद्य साहित्य–** जब हम अपने विचारों को विभिन्न विधाओं; जैसे– कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा, पत्र आदि रूपों में लिखते हैं, तब उसे गद्य साहित्य कहते हैं।
- **पद्य साहित्य–** अपने विचारों को काव्य–शैली (गीत, कविता, दोहा, पद, चौपाई, गजल आदि रूपों) में लिखना पद्य साहित्य कहलाता है।

व्याकरण:

बोलते, पढ़ते तथा लिखते समय हम जिस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, वह शुद्ध है अथवा नहीं, इसका ज्ञान हमें व्याकरण कराता है। अत:

व्याकरण ऐसा शास्त्र है, जो हमें भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाता है।

आइए, पुनरावृति करें

- भाषा का आरंभ संकेतों से हुआ और पूर्ण विकास लिखित रूप में हुआ।
- भाषा के प्रचलित रूप तीन – मान्य रूप दो – लिखित और मौखिक।
- भारत की राजभाषा हिंदी है। प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है।
- लिखित रूप का संचित कोश साहित्य कहलाता है।
- साहित्य के दो रूप होते हैं– 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य
- भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को भाषा और बोली में अंतर स्पष्ट करते हुए संपूर्ण पाठ का विश्लेषण करें।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मनुष्य को भाषा की आवश्यकता क्यों है?

(ख) भाषा के किस रूप का प्रचलन सबसे पहले हुआ?

(ग) क्या सांकेतिक भाषा को मान्यता प्राप्त है? बताइए।

(घ) साहित्य के कितने प्रकार हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा से आप क्या समझते हैं? भाषा और बोली में क्या अंतर है? लिखिए।

(ख) मातृभाषा से क्या तात्पर्य है? बच्चा यह भाषा कहाँ से सीखता है?

(ग) लिपि से आप क्या समझते हैं?

(घ) हमें व्याकरण की आवश्यकता क्यों होती है?

2. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) मूक भाषा आज भी प्रचलित है। ☐

(ख) भारतीय संविधान में केवल 15 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ☐

(ग) भाषा के केवल लिखित और मौखिक रूप को ही मान्यता प्राप्त है। ☐

(घ) बोली का अपना कोई साहित्य नहीं होता। ☐

(ङ) साहित्य संचय का माध्यम भाषा का लिखित रूप है। ☐

3. सही मिलान कीजिए।

(क)	भाषा में एकरूपता लाना	(i)	हिंदी एवं अंग्रेज़ी
(ख)	मराठी भाषा की लिपि	(ii)	मातृभाषा
(ग)	राष्ट्र के कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा	(iii)	देवनागरी
(घ)	बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली प्रथम भाषा	(iv)	मानक भाषा

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. आप भाषा के बिना किसी राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. भारतीय संविधान में वर्णित भाषाओं को लिखिए।

6. अपने मन-पंसद प्रदेश का नाम लिखिए। पसंद का कारण बताते हुए उस प्रदेश की भाषा, लिपि, पहनावा और खान-पान आदि की जानकारी दीजिए। उससे संबंधित चित्र भी चिपकाइए।

प्रेरणादायक मूल्य

भाषा/बोली और व्यवहार इंसान के व्यक्तित्व का परिचय देता है। अत: हमें अपनी भाषा और बोली में मधुरता बनाए रखनी चाहिए ताकि दूसरे व्यक्ति पर हमारा सकारात्मक प्रभाव पड़े।

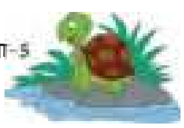

वर्ण–विचार
(Phonology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! पिछले अध्याय में हमने लिपि के बारे में अध्ययन किया। अब जानेंगे कि लिपि को लिखने के लिए जो चिह्न निश्चित किए गए हैं, उन्हें वर्ण कहते हैं।

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।

उदाहरण–

साइकिल = स् + आ + इ + क् + + इ + ल् + अ

रेडियो = र् + ए + ड् + इ + य् + ओ

छोटी–छोटी ध्वनियों को ही वर्ण कहा जाता है।

भाषा की वह छोटी–से–छोटी ध्वनि जिसको विभाजित न किया जा सके, वर्ण कहलाता है।

वर्ण के दो वर्ग–

वर्ण
- स्वर
- व्यंजन

स्वर– ऐसे वर्ण जिन्हें उच्चारित करते समय कंठ से निकलने वाली वायु बिना रुकावट के बाहर आती है तथा जिसके उच्चारण के दौरान किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, उन्हें स्वर कहते हैं।

हिंदी वर्ण में स्वरों की संख्या 11 है।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वर के भेद– स्वरों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

स्वर
- ह्रस्व स्वर
- दीर्घ स्वर
- प्लुत स्वर

ह्रस्व स्वर (Short Vowels)– ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में सबसे कम समय लगता है। ये संख्या में कुल चार हैं– अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ स्वर (Long Vowels)– ऐसे स्वरों का उच्चारण ह्रस्व स्वरों से दोगुने समय में किया जाता है। ये कुल सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

प्लुत स्वर (Longer Vowels)– जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर या ह्रस्व स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग किसी को पुकारने के लिए किया जाता है; जैसे– ओ३म्, रा३म् आदि। परंतु सामान्यत: हिंदी में इन्हें लिखा नहीं जाता।

स्वरों की मात्राएँ–

स्वर	मात्रा	स्वरयुक्त शब्द	मात्रायुक्त शब्द		
			आदि	मध्य	अंत
अ	–	अब	अब	कमल	जब
आ	ा	आप	बाम	अचार	नया
इ	ि	इस	किस	अनिल	गति
ई	ी	ईश	कील	सुनील	डाली
उ	ु	उस	कुल	साबुन	लघु
ऊ	ू	ऊपर	सूप	बातूनी	आलू
ऋ	ृ	ऋषि	कृषि	आकृति	मातृ
ए	े	एक	देवा	विवेक	किनारे
ऐ	ै	ऐसा	कैसा	सदैव	है
ओ	ो	ओर	मोर	चकोर	चलो
औ	ौ	और	भौरा	मंगौड़ा	जौ

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को वर्ण एवं उसके विच्छेद को समझाएँ तथा उसके भेदों से भी अवगत कराएँ।

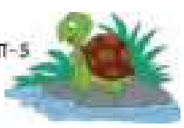

अयोगवाह– 'अं' और 'अ:' इन्हें न तो स्वर कहा जाता है और न ही व्यंजन। इन वर्णों को अयोगवाह कहा जाता है। इन्हें अयोगवाह ध्वनि भी कहते हैं। वस्तुत: ये स्वर नहीं हैं, स्वर वर्णों की भाँति इनकी मात्राएँ नहीं बल्कि चिह्न होते हैं। ये हैं– (ं , :)।

अनुनासिक स्वर (Nasal Vowels)– जब किसी स्वर वर्ण का उच्चारण करते समय मुख और नाक दोनों से वायु निकले, तो उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु लगता है; जैसे– कुआँ, अँधेरा, चाँद आदि।

जिन स्वरों की मात्राओं को शीर्ष रेखा के ऊपर लगाया जाता है, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर (ं) बिंदु का प्रयोग होता है। जैसे– मैँ (✗), मैं (✓); नहीँ (✗), नहीं (✓) आदि।

अनुस्वार (Nasal Consonants)– अनुस्वार का प्रयोग स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग के 'अ' रहित पंचम अक्षर के स्थान पर किया जाता है; जैसे–

क	वर्ग	ङ्	→	गङ्गा	→	गंगा
च	वर्ग	ञ्	→	चञ्चल	→	चंचल
ट	वर्ग	ण्	→	पण्डित	→	पंडित
त	वर्ग	न्	→	हिन्दी	→	हिंदी
प	वर्ग	म्	→	कम्पन	→	कंपन

विसर्ग (:) – इस ध्वनि का उच्चारण 'ह' के समान होता है। विसर्ग को केवल संस्कृत शब्दों के लिए ही प्रयोग में लाते हैं; जैसे– प्रात:, पुन:, अत: आदि।

व्यंजन (Consonants)– ऐसे वर्ण जिन्हें स्वर की सहायता से बोला जाता है अर्थात् जिनके उच्चारण के दौरान हवा रुककर या रगड़ खाकर मुँह से बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन के भेद– 1. स्पर्श व्यंजन 2. अंत:स्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन

1. **स्पर्श व्यंजन–** जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु उच्चारण स्थान विशेष का स्पर्श करती हुई निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं–

वर्ग का नाम	उच्चारण स्थान	ध्वनियाँ	प्रकार
क वर्ग	कंठ	क, ख, ग, घ, ङ	कंठ्य
च वर्ग	तालु	च, छ, ज, झ, ञ	तालव्य
ट वर्ग	मूर्धा	ट, ठ, ड, ढ, ण	मूर्धन्य
त वर्ग	दाँत	त, थ, द, ध, न	दंत्य
प वर्ग	ओष्ठ	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ्य

2. **अंत:स्थ व्यंजन** (Semi-vowels)– ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय स्वरों तथा व्यंजनों के मध्य में प्रयोग करते हैं, इन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भाग को स्पर्श नहीं करती। ये संख्या में चार हैं। य, र, ल, व।

3. **ऊष्म व्यंजन** (Furicative) – ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय हवा की गति के कारण मुँह में रगड़ खाने से ऊष्मा पैदा होती है इसलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी संख्या में चार हैं– श, ष, स, ह।

नासिक्य व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय प्राणवायु, अधिकांश रूप से नाक से निकलती है, उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं; जैसे– ङ, ञ, ण, न, म।

आगत ध्वनियाँ– विदेशी भाषाओं के प्रभाव से हिंदी में ऑ, ज़, फ़ आदि ध्वनियाँ आ गई हैं। कुछ शब्दों के भेद को स्पष्ट करने के लिए इनका प्रयोग आवश्यक हो जाता है; जैसे– हॉल, बॉल, चॉक, ज़मीन, दफ़्तर आदि।

बॉल

फर्ज़
(अपना फर्ज़ पूरा करो)

संयुक्त व्यंजन– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।

क्ष = क् + ष त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ श्र = श् + र

द्‌वित्व व्यंजन– जब एक व्यंजन ध्वनि को समान ध्वनि से जोड़ा जाता है, तो उसे द्‌वित्व व्यंजन कहा जाता है; जैसे– पक्का, बच्चा, छुट्‌टियाँ, सट्‌टा, उल्लास आदि।

वर्ण-विच्छेद– वर्ण-विच्छेद से अभिप्राय है- शब्द के वर्णों को अलग-अलग बताना; जैसे–

किताब– क् + इ + त् + आ+ ब् + अ दिल्ली– द् + इ + ल् + ल् + ई

सैनिक– स्+ ऐ + न् + इ + क् + अ कर्म– क् + अ + + र् + म् + अ

हल चिह्न– इसका प्रयोग व्यंजन के नीचे किया जाता है; जैसे- गद्‌दा, चिट्‌ठी आदि।

'र के विभिन्न रूप–

रात

गर्म

चक्र

ट्रक

इन उदाहरणों में 'र' वर्ण को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया गया है।

आइए, पुनरावृति करें

- भाषिक ध्वनियों का लिखित रूप वर्ण कहलाता है।
- वर्णों का व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है।
- वर्णों के दो भेद हैं– 1. स्वर 2. व्यंजन।
- स्वर के तीन भेद हैं– 1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर।
- व्यंजन के तीन भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ एवं ऊष्म व्यंजन।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वर्णों से आप क्या समझते हैं?
(ख) हिंदी में स्वरों की संख्या कितनी होती है?
(ग) स्वरों के भेदों को सोदाहरण बताइए।
(घ) व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संयुक्त व्यंजन का निर्माण कैसे होता है?
(ख) द्वित्व व्यंजन से क्या अभिप्राय है?
(ग) अनुस्वार वर्ण तथा अनुनासिक वर्ण में अंतर लिखिए।
(घ) अंत:स्थ व्यंजन कितने हैं? नाम लिखिए।

2. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) वर्णों के व्यवस्थित समूह को .... कहते हैं।
(ख) गत्ता और भत्ता .... के उदाहरण हैं।
(ग) स्वरों की सहायता से उच्चरित होने वाले वर्ण .... कहलाते हैं।
(घ) किसी शब्द के वर्णों को विच्छेदित करना .... कहलाता है।
(ङ) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र .... व्यंजन है।

3. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भाषा की सबसे छोटी ध्वनि को क्या कहते हैं?
☐ शब्द ☐ वाक्य ☐ वर्ण ☐ इनमें से कोई नहीं
(ख) बंदर और कंधा शब्दों में प्रयोग किया गया है–
☐ अनुस्वार ☐ अनुनासिक ☐ विसर्ग ☐ स्वर

(ग) व्यंजनों का उच्चारण होता है–

☐ स्वतंत्र ☐ स्वरों पर आश्रित ☐ बिना स्वरों के ☐ कोई नहीं

4. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) शरबत – .... (ख) आदर – ....

(ग) शिक्षा – .... (घ) भक्ति – ....

5. दिए गए शब्दों में यथास्थान अनुस्वार अथवा अनुनासिक के चिह्न लगाइए।

लगर – .... माग – .... महगा – ....

सग – .... चाद – .... अधा – ....

6. दिए गए व्यंजनों के साथ दी गई मात्राओं का प्रयोग करके एक-एक शब्द लिखिए।

त् + आ = ... ल् + आ = ...

प् + ऐ = ... म् + आँ = ...

क्+ इ = ... व + ई = ...

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. हिंदी भाषा को बोलने के लिए वर्णमाला की आवश्यकता होती है जिसके लिए वर्णों का ज्ञान होना बेहद आवश्यक होता है, तो जरा सोचिए! यदि वर्ण को उच्चारित करते समय स्वर न होते तो व्यंजन का उच्चारण संभव हो पाता?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. वर्ग-पहेली में कुछ सार्थक शब्द लिखे हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए।

ब	र	सा	त	उ	प्	जा	ऊ
वा	णी	उ	प	जा	ऊ	बु	रा
व	र्षा	सु	प्र	भा	त	ढ़ा	ष्
शा	स	न	क	वि	त्री	पा	ट्र
वि	श	वा	स	ख	लि	हा	न
क	सू	क्ष	म	वि	स्	ता	र
वि	मं	दि	र	पु	जा	रि	न
अ	चा	न	क	सु	ब	ह	द

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।

रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

अध्याय 3

शब्द–विचार (Morphology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! हम पहले पढ़ चुके हैं कि वर्णों के योग से शब्द का निर्माण होता है–

आइए, कुछ उदाहरणों को देखें–

बकिता, गरकारी ये शब्द वर्णों के समूह तो हैं लेकिन शब्द नहीं हैं क्योंकि इनका कोई अर्थ नहीं है।

इन्हीं को जब हम किताब, कारीगर लिखेंगे, तब ये वर्ण–समूह शब्द कहलाएगा। क्योंकि इनका एक निश्चित अर्थ है।

किताब → बकिता

कारीगर → गरकारी

अत: हम कह सकते हैं कि–

एक अथवा एक से अधिक वर्णों के योग से बनी स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहा जाता है।

शब्द के भेद–

शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है–

शब्द के भेद
- उत्पत्ति के आधार पर
- रचना के आधार पर
- प्रयोग के आधार पर
- अर्थ के आधार पर

1. **उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद–** उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित प्रकार होते हैं–

(क) तत्सम शब्द– ऐसे शब्द जिन्हें मूलत: संस्कृत भाषा से हिंदी में लिया गया है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। ये शब्द संस्कृत से हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए गए हैं; जैसे– सूर्य, मयूर आदि।

सूर्य

मयूर

(ख) तद्‌भव शब्द– ऐसे शब्द जिन्हें संस्कृत भाषा से परिवर्तित करके हिंदी में प्रयोग किया जाता है, उन्हें तद्‌भव शब्द कहते हैं; जैसे– पत्र से पत्ता, पक्षी से पंछी।

पत्ता

पंछी

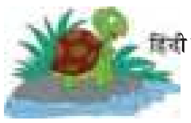

(ग) देशज शब्द– ऐसे शब्द जिन्हें संस्कृत भाषा से छोड़कर अन्य भाषाओं से लिया गया है, उसे देशज शब्द कहते हैं; जैसे– लोटा, पेटी, खिड़की, चुन्नी आदि।

(घ) विदेशज शब्द– ऐसे शब्द जो विदेशों से आवागमन और निकटता बढ़ने के कारण हिंदी में सम्मिलित हो गए, वे विदेशज शब्द कहलाते हैं। इनमें अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द शामिल हैं; जैसे– ड्राइवर, कारीगर, आज़ाद, कैंची आदि।

(ङ) संकर शब्द– जो शब्द दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बनते हैं, उन्हें संकर शब्द कहते हैं जैसे– घड़ी + साज = हिंदी + अरबी, रेल + गाड़ी = अंग्रेज़ी + हिंदी।

2. रचना के आधार पर शब्दों के भेद

रूढ़ | यौगिक | योगरूढ़

(क) रूढ़ शब्द– ऐसे शब्द जो मूल रूप से कोई अर्थ प्रकट नहीं करते, बल्कि प्रचलन में आ जाते हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। इन शब्दों के यदि खंड किए जाएँ, तो इनका कोई अर्थ नहीं निकलता; जैसे– कल, घर, आँख, पानी आदि।

(ख) यौगिक शब्द– जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दों के मेल से बनते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे– चायवाला = चाय + वाला, विद्यालय = विद्या–आलय
इन शब्दों के खंड किए जा सकते हैं और उन खंडों के अर्थ भी होते हैं।

(ग) योगरूढ़– वे यौगिक शब्द जो किसी विशेष अर्थ को स्पष्ट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे– नीलकंठ = नील (नीला) + कंठ (गला)– शिवजी
दशानन = दश (दस) + आनन (मुख)– रावण

3. प्रयोग के आधार पर शब्दों के भेद

विकारी | अविकारी

(क) विकारी शब्द– वे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार या परिवर्तन होता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्द चार हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

(ख) अविकारी शब्द– वे शब्द जिनके रूप, लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता है, अविकारी शब्द कहलाते हैं। अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहा जाता हैं। ये संख्या में चार होते हैं–

अविकारी शब्द

क्रिया–विशेषण | विस्मयादिबोधक | संबंधबोधक | समुच्चयबोधक

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को शब्द को उसके भेदों सहित समझाएँ।

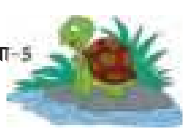

4. अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद

- सार्थक
- निरर्थक

(क) सार्थक शब्द– जिन शब्दों का एक निश्चित अर्थ होता है, वे सार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे– घर, गमला आदि।

(ख) निरर्थक शब्द– जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता, वे निरर्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे– रघ, वमला आदि।

आइए, पुनरावृति करें

- वर्णों का सार्थक मेल शब्द कहलाता है।
- उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद हैं– तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज एवं संकर।
- रचना के आधार पर शब्दों के भेद हैं– रूढ़, यौगिक, योगरूढ़।
- अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं– सार्थक तथा निरर्थक।
- प्रयोग के आधार पर शब्दों के भेद हैं– विकारी तथा अविकारी।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शब्द से आपका क्या तात्पर्य है?

(ख) शब्दों को किन आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है?

(ग) योगरूढ़ और यौगिक शब्दों का अर्थ बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं ? नाम लिखिए।

(ख) 'देशज' शब्द किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

(ग) अर्थ के आधार पर शब्दों के भेदों के नाम लिखिए।

(घ) विकारी तथा अविकारी शब्दों में अंतर लिखिए।

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) 'घी' शब्द कैसा शब्द है?

☐ तत्सम ☐ तद्भव ☐ देशज ☐ विदेशी

(ख) वकील कैसा शब्द है?

☐ देशज ☐ विदेशी ☐ रूढ़ ☐ यौगिक

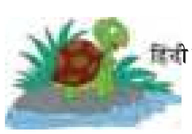

(ग) हाथ का तत्सम शब्द क्या है?

☐ हस्त ☐ हाथी ☐ हस्ति ☐ कुछ भी नहीं

3. दिए गए शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(क) **यौगिक शब्द** **योगरूढ़**

....

....

(ख) **तत्सम** **तद्भव**

....

....

4. शब्दों के उचित मेल से नए शब्द बनाइए और लिखिए।

(क) सेना (i) कुमार ....

(ख) राज (ii) घर ....

(ग) नील (iii) कंठ ....

(घ) चिड़िया (iv) पति ....

सोचें-विचारें
Critical Thinking

5. सुंदर और सकारात्मक शब्दों का हमारे जीवन में क्या महत्व है? सोच-विचार कर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

खेल-खेल में
Brain Storming Activity

6. विकारी शब्द के प्रकार लिखिए।

विकारी शब्द

☐ ☐ ☐ ☐

7. अविकारी शब्दों के प्रकार लिखिए।

अविकारी शब्द

☐ ☐ ☐ ☐

प्रेरणादायक मूल्य

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोए,
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होए।

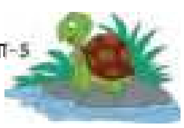

अध्याय 4

वाक्य
(Sentence)

पढ़िए और समझिए

सार्थक शब्दों का व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह वाक्य कहलाता है। वाक्य का निर्माण शब्दों से होता है, जो हमारे भावों को स्पष्ट करते हैं, अतः–

शब्दों का ऐसा सार्थक समूह जो स्पष्ट अर्थ प्रदान करता है, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अंग–(Parts of a Sentence)

वाक्य के मुख्य दो अंग होते हैं–

1. **उद्देश्य** (Subject)– जिसके बारे में कोई बात कही जाती है, वह उद्देश्य कहलाता है; जैसे–

   राकेश फुटबॉल खेल रहा है।　　　राकेश　　　(उद्देश्य)

2. **विधेय** (Predicate)– उद्देश्य के बारे में कुछ बोला जाता है, वह विधेय कहलाता है; जैसे–

   राकेश फुटबॉल खेल रहा है।　　　फुटबॉल खेल रहा है।　　　(विधेय)

   क्योंकि यह उद्देश्य राकेश के विषय में बता रहा है।

वाक्य के प्रकार–(Kinds of Sentences)

सामान्यतः वाक्यों को दो आधारों पर बाँटा जा सकता है–

वाक्य
- रचना के आधार पर
  - सरल वाक्य
  - संयुक्त वाक्य
  - मिश्र वाक्य
- अर्थ के आधार पर
  - विधानवाचक
  - आज्ञावाचक
  - इच्छावाचक
  - संकेतवाचक
  - प्रश्नवाचक
  - निषेधवाचक
  - संदेहवाचक
  - विस्मयवाचक

1. **रचना के आधार पर :** रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–

(क) सरल वाक्य : जिन वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय का प्रयोग होता है, वे सरल वाक्य कहलाते हैं; जैसे- अमन केंद्रीय विद्यालय में पढ़ता है।

उद्देश्य – अमन

विधेय – केंद्रीय विद्यालय में पढ़ता है।

(ख) संयुक्त वाक्य : ऐसे वाक्य जो योजक चिह्न की सहायता से दो वाक्यों को जोड़कर बनाए जाते हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे– दीपिका खाना बना रही है और भैया घूमने चले गए।

एक वाक्य – दीपिका खाना बना रही है।

दूसरा वाक्य – भैया घूमने चले गए।

योजक – और

(ग) मिश्र वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें एक वाक्य प्रधान हो और अन्य वाक्य उस पर आश्रित हों, वे **मिश्र वाक्य** कहलाते हैं; जैसे– वह कपड़े बहुत सुंदर हैं, जो मैंने कल खरीदे थे।

प्रधान वाक्य – वह कपड़े बहुत सुंदर हैं।

दूसरा वाक्य – मैंने कल खरीदे थे।

योजक – जो

आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य पर निर्भर होते हैं, अतः इन्हें अलग से बोलने पर वाक्य की स्पष्टता समाप्त हो जाती है। प्रधान वाक्य अपने–आप में पूरे होते हैं, अतः इन्हें अलग से बोला जा सकता है।

2. **अर्थ के आधार पर :** अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–

(क) विधानवाचक वाक्य : जिन वाक्यों से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के बारे में सामान्य जानकारी देने वाले वाक्यों का पता चलता हो, विधानवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–

(i) संदीप मुंबई जा रहा है।

(ii) ठंडी हवा चल रही है।

(ख) निषेधवाचक वाक्य : जिन वाक्यों से किसी काम के न होने के बारे में जानकारी मिले, निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं;, जैसे–

(i) मुझे खाना नहीं खाना है।

(ii) मैं आज आगरा नहीं जाऊँगा।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को वाक्य को भेद सहित बताएँ तथा प्रत्येक भेद की सोदाहरण व्याख्या करके समझाएँ।

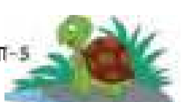

(ग) प्रश्नवाचक वाक्य : प्रश्न संबंधी जानकारी देने वाले वाक्य प्रश्नवाचक कहलाते हैं; जैसे–

(i) आपका नाम क्या है?

(ii) आप क्या करते हैं?

(घ) आज्ञावाचक वाक्य : जिन वाक्यों से किसी दूसरे व्यक्ति को आदेश देने का बोध हो, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–

(i) चुपचाप खाना खाओ।

(ii) शोर मत करो।

(ङ) इच्छावाचक वाक्य : जिन वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, शुभकामना आदि के बारे में पता चलता है, इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–

(i) ईश्वर करे तुम सदा खुश रहो।

(ii) आपको नया साल मुबारक हो।

(च) संकेतवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जो किसी विशेष तथ्य की ओर संकेत करते हैं, संकेतवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–

(i) अगर वह आया तो मैं आऊँगा।

(ii) यदि तुम मेहनत करते तो अवश्य पास हो जाते।

(छ) संदेहवाचक वाक्य : जिन वाक्यों से किसी कार्य के संबंध में संदेह का बोध हो, संदेहवाचक कहलाते हैं; जैसे–

(i) लगता है कोई वहाँ खड़ा है।

(ii) शायद मैं कल कश्मीर जाऊँ।

(ज) विस्मयादिबोधक वाक्य : ये वाक्य हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि का भाव प्रकट करते हैं; जैसे–

(i) छि:! कितना गंदा व्यक्ति है।

(ii) वाह! कितना सुंदर बच्चा है।

आइए, पुनरावृति करें

- सार्थक शब्दों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध संयोजन को वाक्य कहते हैं।
- वाक्य के दो भाग होते हैं– उद्देश्य और विधेय।
- वाक्य के विभाजन के दो आधार हैं– रचना के आधार पर तथा अर्थ के आधार पर।
- रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं– सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य।
- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं– विधानवाचक, प्रश्नवाचक, आज्ञावाचक, निषेधवाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक, संकेतवाचक, विस्मयादिबोधक।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शब्दों के क्रमबद्ध संयोजन को क्या कहा जाता है?

(ख) 'मैं आज आगरा नहीं जाऊँगा'—यह वाक्य के किस भेद का उदाहरण है?

(ग) संदेहवाचक वाक्य का एक उदाहरण बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वाक्य से आप क्या समझते हैं, सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

(ख) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद बताइए। प्रत्येक का एक-एक उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय अलग कीजिए।

(क) अनुष्का सब्ज़ी बेच रही है। ....

(ख) पेड़ पर बंदर कूद रहा है। ....

(ग) ऊँट ने सारा पानी पी लिया। ....

(घ) मुकुल पतंग उड़ा रहा है। ....

(ङ) राधिका ने मधुर गीत गाया। ....

3. दिए गए वाक्यों का रचना के आधार पर भेद (नाम) लिखिए।

(क) राहुल सड़क की ओर चल दिया। ....

(ख) अध्यापक ने बोला और हमने लिखा। ....

(ग) यदि भाई की बात मानी होती तो यह स्थिति न होती। ....

(घ) अचानक तेज हवा चली और वर्षा होने लगी। ....

4. अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद लिखिए—

(क) अरे! तुम कब आए? ....

(ख) आप मुझसे क्यों नाराज़ हैं? ....

(ग) मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। ....

(घ) शायद जुवेदा कल चली जाए। ....

5. सही मिलान कीजिए।

(क) द्रोपदी मुर्मू हमारे देश की राष्ट्रपति हैं।	(i) विस्मयबोधक
(ख) सुनीता तुम अंदर आकर बैठो।	(ii) इच्छावाचक
(ग) विनीत ने भोजन नहीं किया।	(iii) विधानवाचक
(घ) अरे ! यह कार्य ऐसे नहीं होना था।	(iv) आज्ञार्थक
(ङ) आपकी यात्रा मंगलमय हो।	(v) निषेधात्मक

6. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) दरवाज़े बंद कर दो। – ☐ इच्छावाचक ☐ आज्ञावाचक

(ख) शायद आज बरसात हो। – ☐ आज्ञावाचक ☐ संदेहवाचक

(ग) अरे! तुम आ गए। – ☐ विस्मयसूचक ☐ संकेतवाचक

(घ) आज आप क्या खाएँगे? – ☐ प्रश्नवाचक ☐ विधानवाचक

(ङ) सुमेश को ठंडे पानी से नहीं नहाना चाहिए – ☐ निषेधवाचक ☐ प्रश्नवाचक

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. बच्चो! हम लोगों ने पाठ में वाक्यों के संबंध में विस्तारपूर्वक अध्ययन किया तो ज़रा सोच-समझकर बताइए कि संयुक्त वाक्य, मिश्रित वाक्यों से किस प्रकार भिन्न है?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. दिए गए अवतरण को पढ़िए और बताइए कि यहाँ कौन-कौन-से वाक्य के भेद प्रयोग हुए हैं?

एक अमीर आदमी था। वह अक्सर विदेश की यात्रा किया करता था। इसलिए वह अधिकतर घर से बाहर ही रहता था। जब कभी वह लौटकर घर आता, तो आसपास के युवकों को एकत्र करता और उन्हें अपनी यात्रा के चित्र-विचित्र अनुभवों के बारे में बताता।

अक्सर वह उन युवकों से पूछता :

" क्या तुमने पेरिस का आइफिल टॉवर देखा है?" " क्या तुमने पीसा की झुकी हुई मीनार देखी है?"

" क्या तुमने आगरा का ताजमहल देखा है?" "क्या तुमने दिल्ली की कुतुबमीनार देखी है?"

हर बार युवको के मुँह से यही निकलता, "नहीं।"

यह सुनकर अमीर कहता, "तुम लोग घर छोड़कर बाहर कहीं गए ही नहीं, इसलिए तुम्हें जीवन का आनंद नहीं मिला।"

वाक्य	भेद
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार सार्थक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं, ठीक उसी प्रकार अच्छे वाक्यों को बोलने से सुंदर व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

अध्याय 5

संज्ञा
(Noun)

पढ़िए और समझिए

मुस्कान रामायण पढ़ रही है।

महाराणा प्रताप एक महान योद्धा थे।

घोड़े जंगल में दौड़ रहे हैं।

झाँसी की रानी एक साहसी महिला थीं।

बच्चो! उपर्युक्त पंक्तियों में कुछ शब्दों को रंगीन किया गया है। ये शब्द किसी-न-किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि की ओर संकेत कर रहे हैं।

उपर्युक्त पंक्तियों में रामायण, साहसी, घोड़ा, महाराणा प्रताप, झाँसी की रानी शब्द किसी-न-किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के बारे में बता रहे हैं। अत:

किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान अथवा भाव आदि के बारे में जानकारी देने वाले शब्दों को संज्ञा कहा जाता है।

संज्ञा के भेद

- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा
- भाववाचक संज्ञा

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-

प्रेमचंद एक महान उपन्यासकार थे।

हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है।

विराट कोहली को बेहतरीन क्रिकेटर कहा जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रेमचंद, हिमालय एवं विराट कोहली के नाम व्यक्तिवाचक संज्ञा के अंतर्गत आते हैं। अत:

किसी विशिष्ट प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

जातिवाचक संज्ञा

वैसे शब्द जो किसी जाति या समूह का बोध कराते हैं, जातिवाचक संज्ञा कहलाते है, जैसे–

वस्तुएँ – पुस्तक, कार, ट्रक, टी.वी. आदि।

स्थान – शहर, स्कूल, बगीचा, नदी आदि।

प्राणी – पशु–पक्षी, गाय, लड़का, औरत आदि।

किसी वस्तु, प्राणी अथवा स्थान की संपूर्ण जाति की जानकारी देने वाले शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

भाववाचक संज्ञा

भाववाचक संज्ञा से किसी स्थान, व्यक्ति, गुण–दोष आदि का बोध होता है। जैसे– राहुल को नींद आ रही है।

अध्यापिका – बच्चो! आज बहुत ठंड है।

मेरा परीक्षा परिणाम देखकर पिता जी को बहुत प्रसन्नता हुई।

उपर्युक्त वाक्यों में नींद, गरमी और प्रसन्नता शब्द विशिष्ट परिस्थिति अथवा भावनाओं का बोध करा रहे हैं। अत:

किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के गुण-दोष, दशा, भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

भाववाचक संज्ञा की रचना

भाववाचक संज्ञा की रचना निम्नलिखित प्रकार से होती है–

जातिवाचक संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक
लड़का	लड़कपन	मज़दूर	मज़दूरी	वकील	वकालत
युवक	यौवन	गुरु	गुरुत्व	पुरुष	पुरुषत्व
सज्जन	सज्जनता	प्रभु	प्रभुता	मित्र	मित्रता
मानव	मानवता	शिक्षक	शिक्षा	माता	मातृत्व
डाकू	डकैती	शत्रु	शत्रुता	भक्त	भक्ति

सर्वनाम शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक
मम	ममता	आप	अपनत्व	पराया	परायापन
अपना	अपनापन	स्व	स्वत्व	निज	निजत्व

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को संज्ञा तथा उसके भेदों को उदाहरण सहित समझाएँ।

विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाना

विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक
अच्छा	अच्छाई	काला	कालापन	चालाक	चालाकी
कायर	कायरता	मधुर	मधुरता	निर्बल	निर्बलता
सरल	सरलता	खट्टा	खटास	मोटा	मोटापा

क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाना

क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक
हँसना	हँसी	थकना	थकावट	रोना	रुलाई
मुस्कुराना	मुस्कान	पढ़ना	पढ़ाई	उड़ना	उड़ान
लूटना	लूट	चीखना	चीख	सींचना	सिंचाई
फैलना	फैलाव	हारना	हार	भूलना	भूल

आइए, पुनरावृति करें

- संसार में प्रत्येक वस्तु को किसी–न–किसी नाम से अवश्य जाना जाता है।
- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
- मूल रूप से संज्ञा के तीन भेद होते हैं– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक।
- भाववाचक संज्ञाओं की रचना जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण शब्दों से होती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संज्ञा शब्द से आप क्या समझते हैं?

(ख) भाववाचक संज्ञा से क्या पता चलता है?

(ग) किन्हीं पाँच संज्ञा शब्दों के नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संज्ञा के कितने भेद होते हैं? नाम लिखिए।

(ख) जातिवाचक संज्ञा को उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) भाववाचक संज्ञा को किन–किन शब्दों के द्वारा बनाया जाता है?

2. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) किसी भी व्यक्ति, वस्तु और स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। ☐

(ख) जातिवाचक संज्ञा से व्यक्ति की भावनाओं का पता चलता है। ☐

(ग) संज्ञा के चार भेद होते हैं। ☐

(घ) श्रुति एवं सारिका जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं। ☐

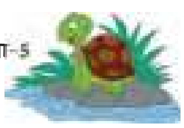

3. **दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में बदलकर रिक्त स्थानों में लिखिए।**

(क) सदैव दूसरों का .... करना चाहिए। (मान)

(ख) द्वारिकाधीश मंदिर की .... अतुलनीय है। (सुंदर)

(ग) कृष्ण को देखकर राधा के मुँह पर .... आ गई। (मुस्कान)

(घ) अर्पण बहुत .... बालक है। (शरारत)

4. **दिए गए शब्दों का भाववाचक रूप लिखिए।**

फैलना –	मित्र –	मीठा – ....
भक्त –	मधुर –	अपना – ....
व्यक्ति –	कवि –	निज – ....
पुरुष –	हिंसक –	पराया – ....

5. **दिए गए प्रकारों के दो-दो उदाहरण लिखिए।**

(क) व्यक्तिवाचक – ....

(ख) जातिवाचक – ....

(ग) भाववाचक – ....

6. **दिए गए शब्दों को उचित स्थान पर लिखिए।**

नींद डाकू प्रसन्न मित्र प्रेमचंद रानी लक्ष्मीबाई बचपन कृष्ण हिरन शांति चतुराई

भाववाचक	व्यक्तिवाचक	जातिवाचक

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. **नाम वाले शब्दों को संज्ञा कहा जाता है, लेकिन यदि हमें किसी व्यक्ति का नाम न पता हो तो हम किस प्रकार के संबोधनों से उसके साथ संवाद स्थापित कर पाएँगे? सोचकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. **दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए।**

(क) बुद्धिचंद नामक एक गरीब व्यक्ति था।

(ख) बुद्धिचंद गरीब था लेकिन ईमानदार था।

(ग) लक्ष्मीचंद ने कहा, "तुम तो धोखेबाज़ निकले।"

(घ) धूर्त के साथ धूर्तता से ही पेश आना चाहिए।

प्रेरणादायक मूल्य

व्यक्ति की पहचान उसके नाम से होती है, और नाम बनाने के लिए अच्छा काम करना होता है।

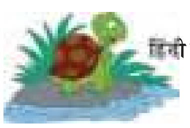

अध्याय 6

(संज्ञा के विकारी तत्व)

लिंग
(Gender)

पढ़िए और समझिए

लिंग जिस संज्ञा शब्द के द्वारा व्यक्ति की जाति का पता चलता है कि वह "पुरुष जाति" का है अथवा "स्त्री जाति" का, उसे लिंग कहा जाता है।

घोड़ा

दादी

सौदागर

लोमड़ी

उपर्युक्त चित्रों में घोड़ा और सौदागर शब्द पुरुष जाति का तथा दादी और लोमड़ी शब्द स्त्री जाति का बोध करा रहे हैं। अतः

संज्ञा के जिस रूप से उसके 'पुरुष' अथवा 'स्त्री' जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद– लिंग के दो भेद हैं–

लिंग के भेद
- पुल्लिंग
- स्त्रीलिंग

1. **पुल्लिंग** (Masculine Gender)– जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–

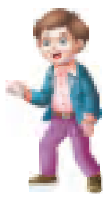
भाई

पिता

शिक्षक

2. **स्त्रीलिंग** (Feminine Gender)– जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–

बहन

माता

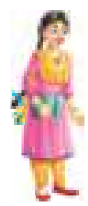
शिक्षिका

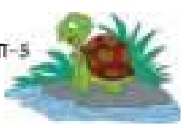

आइए जानिए

- निर्जीव वस्तुओं के लिंग की पहचान करने के लिए वाक्य में प्रयोग किए गए क्रिया अथवा विशेषण को देखते हैं; जैसे–

यह सेब लाल है।

इमली खट्टी है।

उपरोक्त उदाहरणों में सेब **पुल्लिंग** और इमली **स्त्रीलिंग** की जानकारी दे रहा है।

सदैव पुल्लिंग रहने वाले शब्द–

- **देशों के नाम** – भारत, पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका आदि।
- **पर्वतों के नाम** – हिमालय, विंध्याचल आदि।
- **महीनों के नाम** – फरवरी, अक्टूबर, दिसंबर आदि।
- **कुछ ग्रहों के नाम** – शुक्र, मंगल, बुद्ध आदि।
- **दिनों के नाम** – बुधवार, शुक्रवार, रविवार
- **शरीर के कुछ अंगों के नाम** – हाथ, पैर, गला, मुँह आदि।
- वे शब्द जो सदा पुल्लिंग होते हैं इन्हें नित्य पुल्लिंग शब्द कहते हैं। इन्हें स्त्रीलिंग बनाने के लिए मादा शब्द का प्रयोग करना पड़ता है; जैसे– तोता, कछुआ, खरगोश को स्त्रीलिंग बनाने के लिए मादा तोता, मादा कछुआ, और मादा खरगोश का प्रयोग किया जाता है।

याद रखें– ई, आई, और इया से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे– लड़की, मक्खी, भलाई, चिड़िया आदि।

सदैव स्त्रीलिंग रहने वाले शब्द–

- **भाषाओं, बोलियों और लिपियों के नाम** – हिंदी, पंजाबी, अरबी आदि।
- **नदियों के नाम** – गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी आदि।
- **झीलों के नाम** – डल झील, चिलका झील आदि।
- **अंगों के नाम** – नाक, जीभ, कलाई आदि।
- कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग में प्रयोग होते हैं। इन्हें नित्य स्त्रीलिंग शब्द कहा जाता है; जैसे- तितली, मक्खी, मछली, मैना आदि।

आओ, अब कुछ पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों का वाचन करें–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बुद्धिमान	बुद्धिमती	सुत	सुता	वीर	वीरांगना
छात्र	छात्रा	प्रिय	प्रिया	आचार्य	आचार्या
युवक	युवती	भील	भीलनी	पुरुष	महिला

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को लिंग के संबंध में विस्तारपूर्वक समझाते हुए व्यावहारिक रूप से उनका ज्ञानवर्धन करें।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
डिब्बा	डिबिया	पंडित	पंडिताइन	सेवक	सेविका
सेठ	सेठानी	राक्षस	राक्षसी	गायक	गायिका
ठाकुर	ठकुराइन	लुहार	लुहारिन	बिलाव	बिल्ली
गुणवान	गुणवती	कुत्ता	कुतिया	भगवान	भगवती
भाई	बहन	विद्वान	विदुषी	देव	देवी

आइए जानिए

- दिनों, महीनों, पहाड़ों, पेड़ों, देशों, समुद्रों आदि के नाम पुल्लिग होते हैं।
- कुछ शब्दों में नर और मादा लगाकर पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।
- कुछ संज्ञा शब्द स्त्री, पुरुष दोनों के लिए समान रूप से प्रयोग किए जाते हैं; जैसे— राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, इंजीनियर, खिलाड़ी आदि।

आइए, पुनरावृति करें

- हिंदी में लिंग के दो भेद होते हैं— पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग।
- कुछ शब्द पुल्लिग और स्त्रीलिंग के समान रहते हैं; जैसे— प्रधानमंत्री, डॉक्टर, राष्ट्रपति आदि।
- कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग; जैसे— कुछ भाषाओं, नदियों और अंगों के नाम।
- कुछ शब्द सदा पुल्लिग रहते हैं; जैसे— पर्वतों, महीनों और दिनों के नाम।

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लिंग से आपका क्या तात्पर्य है?

(ख) सदा स्त्रीलिंग और सदा पुल्लिग रहने वाले तीन-तीन शब्द बताइए।

(ग) स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में सदैव समान रहने वाले दो शब्दों को लिखिए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए।

(क) <u>आचार्य जी</u> गुरुकुल में पढ़ा रहे हैं?

....

(ख) <u>भाई ने</u> अपनी <u>बहन</u> को उपहार दिया।

....

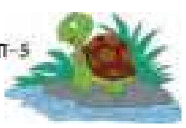

(ग) <u>पंडित</u> जी पूजा की तैयारी कर रहे हैं।

....

(घ) <u>मूर्ख पुरुष</u> का सभी बहिष्कार करते हैं।

....

(ङ) <u>अभिनेत्री</u> ने नाटक में अच्छा अभिनय किया।

....

(च) <u>धोबिन</u> कपड़े धो रही है।

....

2. दिए गए शब्दों के लिंग बताइए।

(क) मक्खी – .... (ख) यमुना – ....

(ग) अंग्रेजी – .... (घ) सोना – ....

(ङ) जुलाई – .... (च) सोमवार – ....

(छ) कबूतर – .... (ज) हलवाई – ....

3. दिए गए शब्दों में नर और मादा लगाकर लिंग बदलिए।

मैना, उल्लू, चीता, लोमड़ी, मकड़ी, खटमल

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. किसी शब्द को 'कर्ता' मानकर तथा उसमें क्रिया लगाकर दो वाक्यों का निर्माण सोच-समझकर कीजिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. अपनी कक्षा में शब्दों की अंत्याक्षरी खेलिए। दो समूह बनाकर बोले गए शब्दों को प्रत्येक समूह का एक प्रतिभागी लिंग पहचानकर दी गई तालिका में लिखें।

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग

प्रेरणादायक मूल्य

स्त्री-पुरुष दोनों को समान भाव से देखना चाहिए। भेदभाव करने से प्रतिभा का दमन होता है।

अध्याय 7

वचन
(Number)

पढ़िए और समझिए

ललित, अपने भाई विकास के साथ अभयारण्य घूमने गया। वहाँ उसने घूमते वक्त अपने कैमरे से कई फोटो खींची।

चित्र में हमने देखा–

एक	अनेक
बच्चा	बकरियाँ
बंदर	बगुले
पिता	भेड़ें
चरवाहा	घोड़े

अर्थात हमने देखा कि जो शब्द संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें वचन कहा जाता है।

वचन के भेद (Kinds of Number)

वचन के दो भेद होते हैं–

- एकवचन
- बहुवचन

एकवचन (Singular)– संज्ञा के जिस रूप से एक संख्या होने का पता चलता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–

बच्चा बंदर बकरी घोड़ा चरवाहा 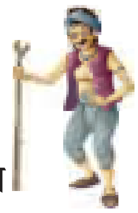

बहुवचन (Plural)– संज्ञा के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–

तोते 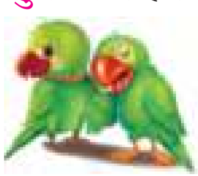 बगुले भेड़ें बकरियाँ लड़के

आइए जानें -

- आदर प्रदान करने के लिए सदैव बहुवचन का प्रयोग होता है; जैसे–
  आप खाना खाइए।   चाचा जी कल आएँगे।
- कुछ शब्द सदैव एकवचन में प्रयोग होते हैं; जैसे– पानी, दूध आदि।
- कुछ शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है; जैसे– हस्ताक्षर, प्राण आदि।
- संज्ञा या सर्वनाम का रूप बदलने से उनकी क्रियाओं का रूप भी बदल जाता है; जैसे–
  मेज़ पर पुस्तक रखी है।   मेज़ पर पुस्तकें रखी हैं।

वचन परिवर्तन के नियम और शर्तें–

1. 'अ' में 'एँ' जोड़कर–

बहन	बहनें	भैंस	भैंसे	आँख	आँखें

2. 'आ' में 'एँ' जोड़कर–

माला	मालाएँ	महिला	महिलाएँ	सभा	सभाएँ

3. 'आ' के स्थान पर 'ए' जोड़कर–

कपड़ा	कपड़े	पंखा	पंखे	बच्चा	बच्चे

4. 'ई' को 'इयाँ' में बदलकर–

घड़ी	घड़ियाँ	मक्खी	मक्खियाँ	गाड़ी	गाड़ियाँ
बिजली	बिजलियाँ	स्त्री	स्त्रियाँ	नदी	नदियाँ

5. स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'या' को 'याँ' करके–

गुड़िया	गुड़ियाँ	कुटिया	कुटियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ	खटिया	खटियाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ

6. स्त्रीलिंग शब्दों के 'उ', 'ऊ' तथा 'औ' के बाद 'एँ' जोड़कर–

ऋतु	ऋतुएँ	जूँ	जूएँ	गौ	गौएँ
बहू	बहुएँ	वधू	वधुएँ	लू	लूएँ

7. पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'गण', 'वृंद', 'वर्ग', 'जन' आदि जोड़कर–

अध्यापक	अध्यापकगण	गुरु	गुरुजन	छात्र	छात्रवृंद
पाठक	पाठकगण	भक्त	भक्तजन	गायक	गायकवृंद
बालक	बालकगण	साधक	साधकजन	कवि	कविवृंद

अध्यापन संकेत
शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को एकवचन तथा बहुवचन से अवगत कराएँ तथा उन्हें बताएँ कि वाक्य की शुद्धता वचन पर निर्भर होती है।

कुछ प्रमुख उदाहरण–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बकरा	बकरे	यात्रा	यात्राएँ	ऋतु	ऋतुएँ
कमरा	कमरे	माला	मालाएँ	वस्तु	वस्तुएँ
बच्चा	बच्चे	मक्खी	मक्खियाँ	तिथि	तिथियाँ
गाए	गाएँ	गुड़िया	गुड़ियाँ	पाठक	पाठकगण
रात	रातें	बुढ़िया	बुढ़ियाँ	बालक	बालकवृंद
बात	बातें	डिबिया	डिबियाँ	मज़दूर	मज़दूरवर्ग
आँख	आँखें	चिड़िया	चिड़ियाँ	कवि	कविवृंद

आइए, पुनरावृति करें

- वचन से वस्तुओं की संख्या का पता चलता है।
- वचन दो प्रकार के होते हैं– 1. एकवचन 2. बहुवचन
- कुछ शब्द सदैव एकवचन में तो कुछ सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
- आदर देने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वचन किसे कहते हैं?

(ख) वचन कितने होते हैं?

(ग) आदर देने के लिए कौन-से वचन का प्रयोग होता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए वाक्यों में कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर भरिए।

(क) रघुवीर की .... सुंदर है। (कविता / सीता)

(ख) उसने नेहा का .... इंतज़ार किया। (घंटे / घंटों)

(ग) राजेश के ऊपर .... पानी पड़ गया। (घड़ों / घड़ा)

(घ) रजनी ने हरे रंग की .... पहनी हैं। (चूड़ी / चूड़ियाँ)

(ङ) .... बच्चे को दूध पिला रही है। (माँ / माँए)

2. दिए गए शब्दों को उचित कॉलम में लिखिए।

आँसू झीलें परदा गाथा कन्याएँ बिजलियाँ गेंद भक्तजन धोती पाठकगण

एकवचन : ....

बहुवचन : ....

3. दिए गए शब्दों के वचन बदलिए।

भाला –	नेता –	युवा – ....
चूहा –	दर्शक –	सीटी – ....
छात्रवृंद –	दूध –	चुहिया – ....

4. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के वचन बदल कर वाक्य दोबारा लिखिए।

(क) मंदिर में घंटी बज रही है।

....

(ख) मैं तीन चपाती खाऊँगा।

....

(ग) हमारी छुट्टी समाप्त होने वाली है।

....

(घ) छत पर कपड़ा सूख रहा है।

....

सोचें-विचारें
Critical Thinking

5. जरा सोचिए! यदि संख्या की खोज नहीं होती, तो आप एकवचन अथवा बहुवचन में कैसे भेद करते?

खेल-खेल में
Brain Storming Activity

6. "वृक्ष लगाओ जीवन बचाओ" विषय पर एक अवतरण लिखिए और उसमें एकवचन शब्दों पर ○ गोला और बहुवचन शब्दों पर वर्ग □ की आकृति बनाइए।

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

विपदाएँ मनुष्य के जीवन का एक अंग हैं इसलिए वह एक हो या अनेक हमें डटकर सामना करना चाहिए।

सर्वनाम
(Pronoun)

पढ़िए और समझिए

शिल्पा मेरी सहेली है। **शिल्पा** मेरे साथ पढ़ती है। **शिल्पा** के पिताजी डॉक्टर हैं। **शिल्पा** की माताजी टीचर हैं। **शिल्पा** की सभी प्रशंसा करते हैं।

ऊपर लिखे वाक्यों में **शिल्पा** संज्ञा शब्द है। इसका बार-बार प्रयोग अटपटा-सा लगता है। यदि इन वाक्यों को कुछ इस प्रकार लिखा जाए–

शिल्पा मेरी सहेली है। **वह** मेरे साथ पढ़ती है। **उसके** पिताजी डॉक्टर हैं। **उसकी** माताजी टीचर हैं। **उसकी** सभी प्रशंसा करते हैं।

इन वाक्यों में **शिल्पा** सिर्फ़ पहले वाक्य में आया है। अन्य वाक्यों में **शिल्पा** के स्थान पर **वह, उसके, उसकी** आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए गए ये शब्द (वह, उसके, उसकी) **सर्वनाम** कहलाते हैं।

वाक्यों में संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम
- पुरुषवाचक सर्वनाम
- निश्चयवाचक सर्वनाम
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- प्रश्नवाचक सर्वनाम
- संबंधवाचक सर्वनाम
- निजवाचक सर्वनाम

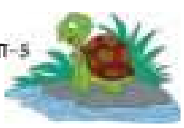

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

वे सर्वनाम शब्द जिन्हें बोलने, सुनने अथवा अन्य किसी व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– तुम, मैं, हम, वह आदि।

मैं खेल रहा हूँ।

तुम अब पढ़ने बैठो।

वह पढ़ रहा है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद

- **उत्तम पुरुष** — हम, मैं आदि (बात करने वाला)
- **मध्यम पुरुष** — तू, तुम (बात सुनने वाला)
- **अन्य पुरुष** — वह, वे (अन्य लोग)

2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)

ऐसे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित वस्तु या प्राणी की ओर इशारा करते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– वह, ये, वे आदि।

यह मेरी किताबें हैं।

ये लो कार साफ़ कर लो।

वह मैदान सुंदर है।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)

ऐसे शब्द जिनसे किसी व्यक्ति या वस्तु की निश्चित जानकारी न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– कुछ, किसने, किससे आदि।

महेश कुछ काम कर रहा है।

ये किससे लेकर आए हो?

तुम किससे मिलने जा रहे थे?

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Introgative Pronoun)

ऐसे सर्वनाम शब्द जिन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग करते हैं। है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– कौन, क्या, कब आदि।

तुम क्या कर रहे हो?

तुम कहाँ जा रहे हो?

ज़रा बताओ बाहर कौन आया था?

5. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)

ऐसे सर्वनाम शब्द जिन्हें संज्ञा तथा सर्वनाम शब्द दोनों को घटाकर जोड़ने के लिए करते हैं। उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– जिसका–उसका, जो–वो आदि।

जिसकी–उसकी भैंस

जैसा खाओगे अन्न
वैसा बनेगा मन।

जो साफ़ अंगूर हैं, उन्हें
अलग रखो।

6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexing Pronoun)

ऐसे सर्वनाम शब्द जिन्हें स्वयं के लिए प्रयोग किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

आप अपना काम स्वयं कीजिए।

किसान अपनी
फसल स्वयं बोता है।

मेरे पिता जी पेड़–पौधों की
देखभाल खुद करते हैं।

आइए जानें–

- एक ही सर्वनाम शब्द का प्रयोग अलग-अलग व्यक्तियों या प्राणियों के लिए बोलकर या लिखकर किया जा सकता है।
- सर्वनाम शब्द स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग दोनों में समान रहते हैं।
- सर्वनाम के एकवचन तथा बहुवचन रूप भी होते हैं।

एकवचन– मैं, मेरा, तुम, वह, इसे, उसे। **बहुवचन–** हम, हमारा, तुम लोग, वे, ये, इन्हें, उन्हें।

आइए, पुनरावृति करें

- संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
- सर्वनाम के छह भेद होते हैं।
- पुरुषवाचक सर्वनाम – पुनः तीन भेद– उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष।
- निश्चयवाचक सर्वनाम (निश्चित प्राणी व वस्तु के लिए)
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम (अनिश्चित प्राणी/वस्तु के लिए)
- प्रश्नवाचक सर्वनाम (प्रश्न पूछने के लिए)
- संबंधवाचक सर्वनाम (एक-दूसरे से संबंध बताने के लिए)
- निजवाचक सर्वनाम (स्वयं के लिए)

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को सर्वनाम के रूप में परिवर्तन संबंधी जानकारी से अवगत कराएँ और उनका अभ्यास कराएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) सर्वनाम से आप क्या समझते हैं?

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम को परिभाषित कीजिए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सर्वनाम के भेदों को परिभाषित कीजिए।

(ख) उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष के विषय में बताइए तथा उदाहरण भी लिखिए।

2. सही वाक्य के सामने (✓) तथा अशुद्ध वाक्य के सामने (✗) लगाइए–

(क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। ☐

(ख) सर्वनाम के छह भेद होते हैं। ☐

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम केवल एक व्यक्ति के विषय में बताता है। ☐

(घ) 'तू' शब्द का प्रयोग अपने से बड़ों के लिए किया जाता है। ☐

3. दिए गए वाक्यों को सर्वनाम के भेदों के अंतर्गत समाहित कीजिए।

(क) अपना कार्य स्वयं कौन करता है? ....

(ख) देखो! बाहर कोई है? ....

(ग) मैं स्वयं चली जाऊँगी। ....

(घ) तुमने अभी तक चाय क्यों नहीं बनाई? ....

4. दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों का उचित प्रयोग कीजिए।

(क) मुझको बाज़ार जाना है। ....

(ख) उन्होंने शरबत पीना है। ....

(ग) हम कोलकाता अकेले कल जाएँगे। ....

(घ) तुम्हारे को क्या तकलीफ़ है? ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. पुरुषवाचक, निश्चयवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) पुरुषवाचक ....

(ख) निश्चयवाचक ....

(ग) निजवाचक ....

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. दी गई कहानी पढ़िए और सर्वनाम शब्दों पर ○ गोला बनाइए।

एक बकरी स्वयं को बहुत होशियार समझती थी। एक दिन वह घास चर रही थी, तभी वहाँ शिकारी आ पहुँचे। उनका इरादा भाँपकर बकरी जान बचाने के लिए भागने लगी। भागते-भागते वह एक ऐसी जगह पर पहुँची, जहाँ नर्म पत्तों वाली कुछ झाड़ियाँ लगी हुई थीं। बकरी उनके पीछे जाकर छिप गई। थोड़ी देर में शिकारी भी पीछा करते हुए वहीं आ पहुँचे। परंतु वे बकरी को नहीं देख पा रहे थे। इधर-उधर खोजने के बाद वे आगे बढ़ गए। यह देख बकरी अपनी चतुराई पर बहुत खुश हुई। कुछ देर बाद बकरी ने नर्म पत्तों को खाना प्रारंभ कर दिया। कुछ ही देर में उसने सारी झाड़ी चटकर डाली। तभी वे शिकारी पुनः उसी स्थान पर लौट आए। उन्होंने घेरकर उस बकरी को पकड़ लिया।

प्रेरणादायक मूल्य

स्वयं सम्मान पाने से पहले हमें दूसरों को सम्मान देना चाहिए।

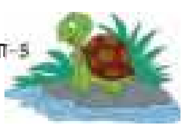

अध्याय 9

विशेषण (Adjective)

पढ़िए और समझिए

आसमान में **पीली** पतंग उड़ रही है। यह फूल **अच्छा** है।

ऐसे शब्द जो संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, **विशेषण** के नाम से जाने जाते हैं; जैसे– ऊपर लिखे वाक्यों में पीली और अच्छा शब्द पतंग तथा फूल की विशेषता बता रहे हैं, इन शब्दों को **विशेषण** कहा जाता है। विशेषण का शाब्दिक अर्थ है– विशेषता उत्पन्न करने वाला विशेषक अर्थात् जिन शब्दों से गुण, दोष, भाव, संख्या, परिमाण आदि का बोध होता है, वे शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेष्य : विशेषण द्वारा जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, वे **विशेष्य** कहलाते हैं; जैसे–

मीठा रसगुल्ला			**रंग-बिरंगे गुब्बारे**		
मीठा	–	विशेषण	रंग-बिरंगे	–	विशेषण
रसगुल्ला	–	विशेष्य	गुब्बारे	–	विशेष्य

विशेषण के भेद– विशेषण के चार भेद होते हैं–

- गुणवाचक विशेषण
- संख्यावाचक विशेषण
- परिमाणवाचक विशेषण
- सार्वनामिक/संकेतवाचक विशेषण

1. **गुणवाचक विशेषण :** जो विशेषण शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था आदि

के बारे में बताते हैं, वे **गुणवाचक विशेषण** कहलाते हैं; जैसे– **यह सेब बहुत मीठा है, मेरी कलम नीले रंग की है।**

ऊपर लिखे वाक्यों में **मीठा** और **नीला** शब्द **सेब** तथा **कलम** के गुण और रंग की विशेषता बता रहे हैं। अत: ये **गुणवाचक विशेषण** हैं।

ऐसे विशेषण शब्द जिनसे संज्ञा और सर्वनाम के भाव, दशा, गुण-दोष, स्थान, आकार आदि की जानकारी प्राप्त हो, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण–

दशा/अवस्था	–	बलवान, कमज़ोर, मोटा, पतला, युवा, वृद्ध।
आकार	–	बड़ा, छोटा, बौना, लंबा, गोल।
स्थान/देशकाल	–	शहरी, ग्रामीण, जापानी, मद्रासी आदि।
गुण-दोष	–	सुंदर, कड़वा, मीठा, बुरा, अच्छा आदि।
भाव	–	वीर, क्रोधी, दयालु आदि।
रंग	–	पीला, काला, लाल, हरा आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण में स्थान, प्राणी अथवा वस्तुओं की संख्या को हम गिन सकते हैं। संख्यावाचक विशेषण के मुख्यत: दो भेद होते हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण–

बगीचे में तीन कुर्सियाँ रखी हैं।

राहुल के पास तीन कलम हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में तीन कुर्सियाँ तथा तीन कलम एक निश्चित संख्या की जानकारी दे रहे हैं। अत: ये निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

जो विशेषण शब्द संज्ञा की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

कुछ अन्य उदाहरण–

- दुगुना, सौ, हज़ार, पहला, पाँचवा आदि।
- श्रुति कक्षा में सदैव प्रथम स्थान पाती है।
- हम लोग पाँच बार वैष्णो देवी जा चुके हैं।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण–

कमरे में बहुत सारे पेपर बिखरे पड़े हैं।

कुछ बकरियाँ घूम रही हैं।

उपरोक्त वाक्यों में बहुत सारे और कुछ शब्द पेपर और बकरियों की अनिश्चित संख्या की ओर संकेत कर रहे हैं, अत: ये अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाएँगे।

ऐसे विशेषण शब्द जिनसे किसी संज्ञा की निश्चित संख्या की जानकारी नहीं होती है, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

कुछ अन्य उदाहरण–

- बारिश के कारण आज कम ही विद्यार्थी उपस्थित हैं।
- हमारी कॉलोनी में कुछ मकान खाली पड़े हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण

रामू बाजार से दो किलो शक्कर ले आओ

राकेश, शर्ट के लिए दो मीटर कपड़ा निकाल दो।

उपर्युक्त वाक्यों में दो किलो और दो मीटर परिमाणवाचक विशेषण हैं। परिमाण अर्थात् माप–तौल। अत:

ऐसे शब्द जिससे किसी वस्तु की माप–तौल अथवा मात्रा की जानकारी होती है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

परिमाणवाचक विशेषण के मुख्यत: दो भेद होते हैं–

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण (ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

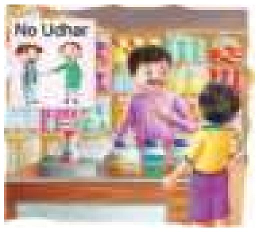

मुझे दो किलो दाल दे दीजिए।

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण–

एक निश्चित मात्रा, माप-तौल आदि का बोध कराने वाले विशेषण शब्दों को निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

- ❖ श्याम चार किलो आम ले आओ।
- ❖ मेरे घर में तीन लीटर दूध आता है।
- ❖ शर्ट के लिए दो मीटर कपड़ा ले आना।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण –

थोड़ा खाना खा लीजिए।

कुछ खाने के लिए ले आओ।

वाक्यों में थोड़ा और कुछ शब्दों से निश्चित मात्रा/संख्या की जानकारी नहीं मिल पा रही है। अत: ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

अनिश्चित माप-तौल तथा मात्रा का बोध कराने वाले विशेषण शब्द अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

- ❖ आज दाल में नमक कम है।
- ❖ आज बहुत चाय पी ली है।
- ❖ अभी गाड़ी में बहुत पेट्रोल है।
- ❖ मुझे कुछ पैसों की ज़रूरत है।

4. सार्वनामिक विशेषण–

वह कार मेरी है।

ये साइकिल अमन की है।

यह घना जंगल है।

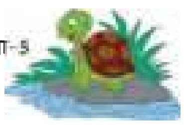

उपर्युक्त वाक्यों में 'वह' 'ये' और 'यह' शब्द संज्ञा से पहले आकर उनकी विशेषता बता रहे हैं। अतः इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। अतः

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले प्रयोग किए जाने पर विशेषण का कार्य करते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। सार्वनामिक विशेषण को संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं।

कुछ अन्य उदाहरण– ❖ वह लड़का मेरा चचेरा भाई है। ❖ यह मिठाई बहुत अच्छी है।

आइए, पुनरावृति करें

- संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
- जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
- विशेषण के चार भेद माने जाते हैं– गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाण वाचक विशेषण, सार्वनामिक विशेषण।
- संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–
  ❖ निश्चित संख्यावाचक विशेषण ❖ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
- परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–
  ❖ निश्चित परिमाणवाचक ❖ अनिश्चित परिमाणवाचक
- जब सर्वनाम, संज्ञा शब्दों से पहले आते हैं, तो वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को विस्तारपूर्वक विशेषण के संबंध में बताएँ तथा वाक्यों में से विशेषण शब्दों का सही चयन करना सिखाएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) विशेषण शब्द का शाब्दिक अर्थ समझाइए।

(ख) विशेषण के कितने भेद होते हैं? नाम बताइए।

(ग) गुणवाचक और सार्वनामिक विशेषण में अंतर बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं? उसके भेदों को सोदाहरण लिखिए।

(ख) संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण के बीच के अंतर को लिखिए।

(ग) सार्वनामिक विशेषण किसे कहते हैं? सोदाहरण समझाइए।

2. उचित विशेषण चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

(क) छत पर .... बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं। (चार, एक)

(ख) नीम का वृक्ष .... होता है। (स्वास्थ्यवर्धक, हानिकारक)

(ग) .... कमरे में पिता जी आराम कर रहे हैं। (यह, वह, इस)

(घ) मुदित सबसे अधिक .... है। (गर्म, ठंडा, बुद्धिमान)

(ङ) अपने कमरे के पर्दे के लिए मुझे .... कपड़ा चाहिए। (20 मीटर, दो दर्जन)

3. दिए गए विशेषण शब्दों को उचित स्थान पर लिखिए।

मोटा	रंगीन	दस मीटर	इस	अनेक	पाँच किलो
पूर्वी	चतुर	वह	प्रथम	थोड़ा-सा	कुछ

(क) गुणवाचक : ....

(ख) संख्यावाचक : ....

(ग) परिमाणवाचक : ....

(घ) सार्वनामिक : ....

4. विशेषण और विशेष्य का मिलान कीजिए।

(क) पाँच मीटर	(i) लड़का
(ख) स्वस्थ	(ii) व्यक्ति
(ग) सुंदर	(iii) कपड़ा
(घ) हरा	(iv) ऋतु
(ङ) सुहानी	(v) महल
(च) चालाक	(vi) बगीचा

5. दिए गए वाक्यों से विशेषण छाँटकर उनके भेदों के नाम लिखिए।

वाक्य	विशेषण शब्द	भेद
बहादुर सैनिकों ने चढ़ाई कर दी।		
मैंने दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया।		
माँ ने दो किलो आलू मँगाए हैं।		
वह मजदूर बहुत ईमानदार है।		
कुछ लोग परिश्रम का महत्व नहीं समझते।		

6. दिए गए शब्दों में विशेषण शब्दों पर गोला ○ लगाइए।

(क)	चालाक	हम	प्रथम	उपयोगी	बेईमान	मोटा
(ख)	तुम	कुछ	अनेक	सहनशील	दृश्य	बच्चा
(ग)	राधा	आठ	जयपुर	तुम्हारा	भयानक	आसान

7. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द कहलाते हैं–

☐ संज्ञा ☐ सर्वनाम ☐ विशेषण

(ख) विशेषण के भेद हैं–

☐ तीन ☐ दो ☐ चार

(ग) विशेषण किसकी विशेषता बताते हैं?

☐ संज्ञा ☐ सर्वनाम ☐ इन दोनों की

सोचें-विचारें

Critical Thinking

8. आप अपने पिता जी के साथ ज़मीन खरीदने के लिए ज़मीन के मालिक के पास गए तो ज़मीन मालिक ने दो सौ गज का टुकड़ा दिखाया। अब आप सोचकर यह बताइए कि ज़मीन मालिक की ज़मीन किस विशेषण को दर्शा रही है?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

9. दिए गए कहानी के अंश को पढ़िए और इसमें प्रयुक्त विशेषण शब्द के नीचे रेखा खींचिए–

एक दिन सवेरे-सवेरे एक ब्राह्मण सुनसान रास्ते से जा रहा था, उसके साथ उसकी बकरी भी थी। तीन ठगों की नज़र उसकी बकरी पर पड़ी। एक ठग ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि इस मोटी-ताज़ी बकरी को किसी तरह हथिया लिया जाए।"

दूसरे ठग ने कहा, "चलो, हम बकरी छीनकर भाग चलें। यह मोटा ब्राह्मण हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।"

तीसरे ठग ने कहा, "नहीं, बकरी छीनकर भागने की ज़रूरत नहीं है। मैंने एक अच्छी तरकीब सोच ली है।" फिर उसने वह तरकीब अपने साथियों को बताई। दोनों ठगों ने अपने साथी की योजना सुनी तो वे खुशी से उछल पड़े। उन्होंने उसी तरकीब से बकरी ले लेने का निश्चय किया।

प्रेरणादायक मूल्य

संसार में हर प्राणी विशेष है। सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, हमें उनका सम्मान करना चाहिए।

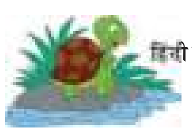

अध्याय 10

क्रिया
(Verb)

पढ़िए और समझिए

"जंगल की सभा"

एक दिन अचानक शेर दहाड़ा,
"आज है मुझको एक सभा बुलानी,
एक बात मुझे आज सबको है बतानी।"
चिड़ियाँ चहकी चीं-चीं कर सबको संदेशा दे आई,
भौंकता हुआ कुत्ता भागा खूब दौड़ लगाई।
चूहा, चुहिया लगे उछल-कूद मचाने,
कोयल लगी सुरीला गाने।
हिरन-हिरनी संग दौड़ा आगे-आगे,
मोटा हाथी अपनी सूँड में दबाकर
मीठा गन्ना लेकर भागे।
बंदर-बंदरिया बैठे पेड़ की डाली
मेंढक, कछुआ बोले अपनी-अपनी बोली।
पशु-पक्षी सारे जंगल के शेर के चारों ओर बैठे,
शेर दहाड़ा और बोला, "डरो नहीं, खुशियाँ आज मनाओ,
जन्मदिन है आज मेरा, खूब खाओ और नाचो गाओ।"

कविता में प्रयोग किए गए रंगीन शब्द किसी-न-किसी कार्य के होने की जानकारी दे रहे हैं। इन्हें क्रिया कहते हैं। क्रिया का अर्थ ही होता है 'काम'। अर्थात्

जिन शब्दों के द्वारा किसी काम के करने या होने की जानकारी हो, उन्हें क्रिया कहा जाता है।

कार्य करने वाले को **कर्ता** कहा जाता है।

धातु– क्रिया के मूलरूप को धातु कहा जाता है; जैसे– आ, जा, सो, देख, हँस आदि।

लिंग, वचन और कारक में परिवर्तन होने पर क्रिया का रूप परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

लिंग परिवर्तित होने पर	वचन परिवर्तित होने पर	कारक परिवर्तित होने पर
लड़का बैट से खेल रहा है।	लड़का लिख रहा है।	विनीत ने लेख लिखा।
लड़की बैट से खेल रही है।	लड़के लिख रहे हैं।	विनीत लेख लिख रहा है।

क्रिया के दो भेद होते हैं– 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया

क्रिया

सकर्मक क्रिया | अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया –जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म का भी प्रयोग होता है, उस क्रिया को **सकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे– इन वाक्यों में–

कर्म– चुगना, चित्र

क्रिया–चुग रही है, बना रहा है।

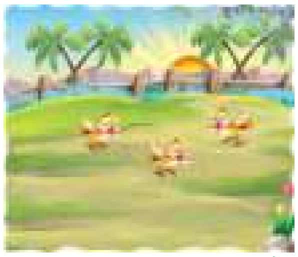

चिड़िया दाना **चुग रही है।**

सुदेश चित्र **बना रहा है।**

ऊपर लिखे वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म का भी प्रयोग किया गया है। अतः ये **सकर्मक क्रिया** हैं।

❖ सकर्मक क्रिया की पहचान

सकर्मक क्रिया की पहचान कर्म के माध्यम से होती है। जब हम क्रिया के साथ में 'क्या' अथवा 'किसे' लगाकर प्रश्न करते हैं, सकर्मक क्रिया का निर्माण होता है, जैसे – राहुल खाना खाता है।

प्रश्न – राहुल **क्या** खाता हैं? उत्तर – खाना।

यह सकर्मक क्रिया है।

रमेश ने मुझे खाना खिलाया।

प्रश्न – रमेश ने **किसे** खाना खिलाया? उत्तर – मुझे।

यह सकर्मक क्रिया है।

अकर्मक क्रिया– ऐसे वाक्य जिनमें क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं होता है, उस क्रिया को अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे– सुशीला **गा रही** है।

'क्या' और 'किसे' लगाकर प्रश्न करते हैं; जैसे– सुशीला क्या गा रही है?

सुशीला **गा रही** है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को क्रिया तथा उसके भेदों के बारे में बताएँ तथा उनसे संबंधित वाक्य निर्माण के तरीकों का भी अभ्यास करवाएँ।

कर्म – कुछ नहीं है।
क्रिया– गा रही है,
अत: यह अकर्मक क्रिया है।

❖ अकर्मक क्रिया की पहचान

किसी वाक्य में अकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए 'क्या' लगाकर प्रश्न करें, यदि उत्तर न मिले तो वह अकर्मक क्रिया है; जैसे– बस जा रही है।

प्रश्न – बस **क्या** जा रही है? उत्तर – कोई उत्तर नहीं।
यह अकर्मक क्रिया है।

तोते उड़ रहे हैं।

प्रश्न – तोते **क्या** उड़ रहे हैं? उत्तर – कोई उत्तर नहीं।
यह अकर्मक क्रिया है।

आइए, पुनरावृति करें

- किसी काम को करना या होना बताने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।
- क्रिया के दो भेद होते हैं। 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया।
- क्रिया के मूल रूप को धातु कहा जाता है।
- लिंग, वचन और कारक का प्रभाव क्रिया पर पड़ता है।
- क्रिया के साथ कर्म हो, तो सकर्मक क्रिया, कर्म न हो तो अकर्मक क्रिया कहलाती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य
Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) क्रिया से आप क्या समझते हैं?
(ख) क्रिया के भेदों को उदाहरण के साथ समझाएँ।
(ग) क्रिया के मूल रूप को क्या कहते हैं? उदाहरण देकर बताइए।

लेखन कार्य
Writing Skills

1. दिए गए वाक्यों को सकर्मक रूप में लिखिए।

(क) लड़के चल रहे हैं। ....
(ख) रीतिका गा रही है। ....
(ग) राहुल खेल रहा है। ....

(घ) विदुषी चल रही है। ....

(ङ) छोटा बच्चा रो रहा है। ....

2. दिए गए वाक्यों में क्रिया शब्द ढूँढ़िए और उनके भेद भी लिखिए।

(क) सुनिधि विद्यालय जा रही है। ....

(ख) नर्स ने मरीज को दवाई दी। ....

(ग) रंजीत वायलन बजा रहा है। ....

(घ) वह पढ़ाई कर रहा है। ....

3. दिए गए वाक्यों में सही कथन के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) लगाइए।

(क) क्रिया का सामान्य रूप धातु कहलाता है। ☐

(ख) लड़का साइकिल चला रहा है, सकर्मक क्रिया है। ☐

(ग) क्रिया के चार भेद होते हैं। ☐

(घ) 'मैंने पत्र लिखा' में 'पत्र' क्रिया है। ☐

4. दिए गए वाक्यों में से क्रियाएँ छाँटकर लिखिए।

(क) राहुल सो रहा है। ....

(ख) गीतिका खेल चुकी है। ....

(ग) लड़के कसरत कर रहे हैं। ....

(घ) सुमन फ़िल्म देखने जा रही है। ....

(ङ) दौड़ प्रतियोगिता में मनु प्रथम आएगा। ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. किसी कार्य के होने या करने को क्रिया कहा जाता है। कुछ कार्य किए जाते हैं जो आप करते हैं और कुछ कार्य स्वयं होते हैं? कुछ ऐसे कार्यों को सोचकर बताइए जो परोपकार हेतु किए जाते हैं?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. आपके द्वारा प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाइए और उस सूची में से ऐसे कार्यों को रेखांकित कीजिए जिससे भविष्य में नुकसान होने की उम्मीद ज्यादा है, इस प्रकार के कार्यों को न दोहराते हुए कुछ कार्यों को अपनी जीवन-शैली में अपनाइए।

प्रेरणादायक मूल्य

"कर्म ही असली पूजा है।" अत: हमें अपना काम पूरी ईमानदारी से करना चाहिए।

अध्याय 11

काल तथा अव्यय
(Tense and Indeclinable Words)

पढ़िए और समझिए

रमेश खेलने **गया था**।

रमेश खेल **रहा है**।

रमेश खेलने **जाएगा**।

आपने देखा कि उपरोक्त वाक्यों में कार्य के अलग-अलग समय पर होने के बारे में पता चल रहा है–

- पहले वाक्य में **गया था** शब्द से पता चलता है कि काम बीते समय में हो चुका है।
- दूसरे वाक्य में **रहा है** शब्द से पता चलता है कि काम वर्तमान समय में हो रहा है।
- तीसरे वाक्य में **जाएगा** शब्द से पता चलता है कि काम आने वाले समय में होगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।

काल तीन प्रकार के होते हैं–

काल
- भूतकाल
- वर्तमानकाल
- भविष्यत्काल

1. **भूतकाल**– क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय की जानकारी प्राप्त हो, उसे **भूतकाल** कहते हैं; जैसे–
   सुभाष ने खाना **खा लिया**, हर्ष फुटबॉल खेल **रहा था**।

ऊपर लिखे वाक्यों में **खा लिया** और **रहा था** शब्दों से बीते हुए समय का पता चल रहा है। अतः ये भूतकाल हैं।

मुख्य पहचान – वाक्य के अंत में था, थी, थे लगता है।

2. **वर्तमानकाल–** अर्थात् चल रहा समय; जैसे–

राहुल खाना खा रहा है।

सुदेश क्रिकेट खेल रहा है।

अस्मिता पानी पी रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खा रहा है', 'खेल रहा है' और 'पी रही है' से कार्य के वर्तमान में होने का पता चल रहा है। अतः

क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का पता चलता है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

3. **भविष्यत्काल–** 'भविष्यत्' अर्थात् आने वाला समय; जैसे–

कल मैं केरल जाऊँगा।

अगले हफ़्ते मैं ऑफ़िस ज्वॉइन करूँगा।

माँ आप चिंता मत करिए, मैं रात तक आ जाऊँगा।

उपर्युक्त सभी चित्रों में जाऊँगा, करूँगा और आ जाऊँगा क्रियाओं से आगे आने वाले समय में काम के होने का पता चल रहा है। अतः

क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने का बोध होता है, उसे भविष्यत्काल कहते हैं।

वाक्यों में काल की पहचान

क्रिया के रूप को देखकर काल की पहचान की जाती है–

भूतकाल की पहचान–

1. जिन क्रियाओं के अंत में था, थी, थे, रहा, रही, रहे, की, किया, किए आदि लगे होते हैं, वहाँ भूतकाल माना जाता है।
2. 'या', 'यी'(ई), 'ये'(ए) से समाप्त होने वाली क्रियाएँ भी भूतकाल की होती हैं।

वर्तमान काल की पहचान–

1. सामान्य रूप में जिन क्रियाओं के अंत में 'है' अथवा 'हैं' लगा होता है, वह वर्तमान काल होता है।
2. क्रियाओं के अंत में 'है' और 'हैं' के साथ 'रहा है', 'रही है' लगा होने पर भी वर्तमान काल ही होता है।

भविष्यत्काल की पहचान–

'आने वाला समय' जैसे– जिन क्रियाओं के अंत में 'गा', 'गी', 'गे' होता है, वह भविष्यत् काल होता है।

अव्यय या अविकारी शब्द

बच्चो! हमने लिंग, वचन, कारक आदि के विषय में अध्ययन किया है और यह भी पढ़ा है कि इनका वाक्यों में प्रयोग करने पर विकार उत्पन्न हो जाता है अर्थात् रूप परिवर्तित हो जाता है।

अब उन शब्दों के विषय में पढ़ेंगे जिनमें, लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई विकार (परिवर्तन) नहीं होता है, ऐसे शब्द अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे–

रीतिका जल्दी-जल्दी बोल रही है।

विशाल धीरे-धीरे सीढ़ी से उतर रहा है।

वे लोग अचानक दौड़ पड़े।

यहाँ 'जल्दी-जल्दी', 'धीरे-धीरे' तथा 'अचानक' शब्दों पर लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं हो रहा, अत: ये अविकारी शब्द हैं। अत:–

वाक्य के जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं।

अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–

अविकारी शब्दों के भेद

- क्रिया-विशेषण
- संबंधबोधक
- समुच्चयबोधक
- विस्मयादिबोधक

क्रिया-विशेषण

वाक्य के जिस शब्द से क्रिया की विशेषता का बोध होता है, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे–

खरगोश बहुत तेज़ दौड़ता है।

रिंकू तुम उधर बैठो।

प्रीति आज बहुत खुश बैठी है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बहुत तेज़', 'उधर' और 'बहुत खुश' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये शब्द क्रिया-विशेषण शब्द कहलाएँगे।

क्रिया-विशेषण के भेद
(Kinds of Adverbs)

- कालवाचक क्रिया-विशेषण
- परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
- स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
- रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

1. **कालवाचक क्रिया-विशेषण** (Adverb of Time)– कालवाचक क्रिया-विशेषण क्रिया के होने के समय का ज्ञान कराते हैं; जैसे–

हम सब आज रात को दस बजे इलाहाबाद जाएँगे।

इस वाक्य में आज रात और दस बजे शब्द कार्य होने के समय का ज्ञान करा रहे हैं।

कुछ अन्य कालवाचक शब्द– कल, परसों, आज, अभी, सदा, जब, तब, हमेशा रोज़ आदि।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को काल तथा अव्यय के भेदों को विस्तारपूर्वक समझाएँ जिससे बच्चों को आसानी से समझ आ जाएँ।

2. **परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण** (Adverb of Quantity)– परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण क्रिया के परिमाण अथवा माप-तौल का ज्ञान कराते हैं; जैसे–

गिलास दूध से पूरा भरा हुआ है। कम बोलना, अधिक सुनना अच्छा है।

उपर्युक्त उदाहरणों में पूरा, कम एवं अधिक शब्द मात्रा एवं माप-तौल का ज्ञान करा रहे हैं।

अन्य परिमाणवाचक शब्द हैं– पूरा, खाली, ज्यादा, न्यून, आधा, लगभग, बहुत आदि।

3. **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण** (Adverb of Place)– स्थानवाचक क्रिया-विशेषण क्रिया के स्थान का ज्ञान कराते हैं; जैसे–

बाहर देखो, टॉमी कहाँ घूम रहा है?

उपर्युक्त वाक्य में बाहर और कहाँ शब्द स्थान का ज्ञान करा रहे हैं।

कुछ अन्य स्थानवाचक क्रिया-विशेषण शब्द हैं– यहाँ-वहाँ, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, इस ओर आदि हैं।

4. **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण** (Adverb of Manner)– रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, क्रिया होने की रीति या ढंग का ज्ञान कराते हैं; जैसे–

तेज़ आँधी आ रही है।

इस वाक्य में तेज़ शब्द क्रिया की रीति बता रहा है।

कुछ अन्य रीतिवाचक क्रिया-विशेषण शब्द– शायद, सच, इसलिए, ज़रूर, धीरे-धीरे, ध्यान से, अचानक, जल्दी, रोते-रोते, दौड़कर, अच्छा आदि।

संबंधबोधक

जिन शब्दों द्वारा संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध जाना जाता है, वे संबंध बोधक कहलाते हैं; जैसे–

मेरे घर के सामने पार्क है।

उपर्युक्त वाक्य में 'के सामने' शब्द संज्ञा और सर्वनाम का आपसी संबंध बता रहे हैं।

कुछ अन्य संबंधबोधक शब्द– के आगे, की ओर, के समान, के द्वारा, के बदले, की ओर, के मारे, के साथ, की तरफ़, के पास आदि।

संबंधबोधक के भेद
(Kinds of Prepositions)

संबंधबोधक अव्यय के नौ भेद माने जाते हैं–

स्थान सूचक – अंदर, बाहर, ऊपर, नीचे आदि।

विरोध सूचक – अनुकूल, प्रतिकूल, सीधा, उल्टा आदि।

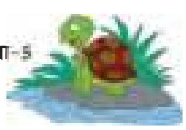

व्यतिरेक सूचक	–	सिवाय, अलावा, अतिरिक्त, रहित आदि।
समता सूचक	–	अनुसार, समान, तरह आदि।
दिशा सूचक	–	दूर, पास, निकट, सामने आदि।
साधन सूचक	–	के द्वारा, के माध्यम आदि।
हेतु सूचक	–	के लिए, कारण आदि।
सहचर सूचक	–	संग, साथ आदि।
काल सूचक	–	बाद, पहले, पीछे, आगे, पश्चात् आदि।

क्रिया-विशेषण और संबंधबोधक में अंतर–

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण और संज्ञा तथा सर्वनाम में संबंध बताने वाले शब्द संबंधबोधक कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक (Conjunction)

दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे–

संजय गरीब है, परंतु ईमानदार है।

राधा झूला झूल रही है और गीत गा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'परंतु' तथा 'और' शब्द दो वाक्यों को आपस में जोड़ रहे हैं, अतः इन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इन्हें **'योजक'** भी कहते हैं।

समुच्चयबोधक के तीन भेद हैं–

समुच्चयबोधक के भेद
(Kinds of Conjunctions)

- संयोजक
- विभाजक
- विकल्पसूचक

1. **संयोजक–** जो समुच्चयबोधक शब्द जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें संयोजक कहते हैं; जैसे– और, अथवा आदि।
2. **विभाजक–** जो समुच्चयबोधक शब्द भेद प्रकट करते हुए दो वाक्यांशों को मिलाते हैं, उन्हें विभाजक कहते हैं; जैसे– अगर, मगर, इसीलिए, किंतु आदि।
3. **विकल्पसूचक–** जो संबंधसूचक शब्द विकल्प का बोध कराते हैं, उन्हें विकल्पसूचक कहते हैं; जैसे–अथवा, यद्यपि आदि।

विशेष– कुछ समुच्चयबोधक वाक्यों के प्रारंभ में भी आते हैं; जैसे–

चाहे मानो चाहे ना मानो। यदि कल धूप निकलेगी तो मैं जाऊँगी।

विस्मयादिबोधक (Interjection)

सुख-दु:ख के भाव, घृणा, शोक, आश्चर्य आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं; जैसे-

अरे! तुम कहाँ चले गए थे?

वाह! कितनी सुंदर ड्रेस है।

कुछ विस्मयादिबोधक शब्द -

क्रोध सूचक	-	चुप!	शोक सूचक	-	हाय रे!
हर्षसूचक	-	ओह! वाह!	आश्चर्यसूचक	-	आह! अरे बाप रे!
घृणासूचक	-	छि: छि:	संबोधन	-	ओ! अरे!
स्वीकृति सूचक	-	हाँ, अच्छा			

विशेष- विस्मयादिबोधक शब्दों से आश्चर्य, घृणा, हर्ष, शोक आदि के भाव प्रकट होते हैं, ये केवल मन के भाव होते हैं।

आइए, पुनरावृति करें

- क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में होने का पता चलता है, उसे भूतकाल कहते हैं।
- कार्य के अभी होने का पता चले, तब उस क्रिया को वर्तमान काल कहा जाता है।
- क्रिया का जो रूप आगे आने वाले समय में कार्य होने की ओर संकेत करे, उसे भविष्यत्काल कहते हैं।
- अविकारी शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।
- अविकारी शब्दों के चार भेद हैं- क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक।
- जो क्रिया की विशेषता बताएँ, वे क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
- क्रिया-विशेषण के चार प्रकार हैं-
- 1. कालवाचक 2. परिमाणवाचक 3. स्थानवाचक 4. रीतिवाचक।
- संज्ञा या सर्वनाम शब्दों में संबंध बताने वाले शब्द संबंधबोधक कहलाते हैं।
- दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
- मन के भावों को प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

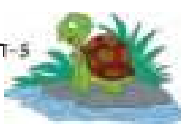

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) काल से आप क्या समझते हैं?

(ख) काल के कितने भेद होते हैं? नाम बताइए।

(ग) एक ऐसा वाक्य बताइए जिसके पीछे गा/गी/गे लगा हो।

(घ) अविकारी शब्द किसे कहते हैं?

(ङ) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्या कहलाते हैं?

(च) क्रिया-विशेषण के भेदों के नाम बताइए।

(छ) संबंधबोधक शब्दों के दो उदाहरण दीजिए।

(ज) समुच्चयबोधक का क्या काम है?

(झ) विस्मयादिबोधक शब्द कौन-कौन से भाव प्रकट करते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) क्रिया के होने का समय .... कहलाता है।

(ख) जब क्रिया समाप्त हो चुकी हो, उसे .... कहते हैं।

(ग) जब क्रिया चल रही हो, उसे .... कहते हैं।

(घ) जब कार्य के भविष्य में होने की संभावना हो, उसे .... कहते हैं।

2. दिए गए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण शब्द छाँटकर उनके भेद लिखिए।

	क्रिया-विशेषण	भेद
(क) सभी खिलाड़ी अच्छा खेले।	....	....
(ख) चीता तेज़ दौड़ रहा है।	....	....
(ग) मेरा दोस्त दिल्ली से अभी आएगा।	....	....
(घ) टोकरी फलों से पूरी भरी है।	....	....
(ङ) इधर-उधर देखे बिना सड़क पर मत चलो।	....	....

3. दिए गए वाक्यों में संबंधबोधक शब्दों को रेखांकित कीजिए।

(क) मनुष्य को पक्षियों की तरह मनोबल ऊँचा रखना चाहिए।

(ख) प्रातः काल पूर्व दिशा की ओर मुँह करके सूर्य-नमस्कार करना चाहिए।

(ग) नेहा अपनी सहेली के घर गई।

(घ) चॉकलेट देखकर बच्चे खुशी के मारे उछल पड़े।

4. क्रिया का उचित मिलान कर वाक्य पूरे कीजिए।

(क)	पक्षी बादल देखकर	(i)	उगता है।
(ख)	लता मंगेशकर सुरीला	(ii)	प्रसन्न होते हैं।
(ग)	सूर्य पूरब दिशा से	(iii)	उठता है।
(घ)	रमन खाना खाकर	(iv)	गाती हैं।
(ङ)	वह सुबह जल्दी	(v)	सो गया।
(च)	रश्मि कुल्लू मनाली	(vi)	जा रही है।

5. संबंधबोधक शब्दों से वाक्य बनाएँ।

(क) के सामने – ....

(ख) के साथ – ....

(ग) से दूर – ....

(घ) की ओर – ....

(ङ) के बदले – ....

6. दिए गए शब्दों में समुच्चयबोधक शब्दों को रेखांकित कीजिए।

(क) माँ ने बहुत बुलाया, पर बेटा नहीं आया।

(ख) मैंने बहुत कोशिश की, परंतु गाड़ी नहीं पकड़ सका।

(ग) मन लगाकर पढ़ो, ताकि अच्छे अंक आएँ।

(घ) मैंने बहुत समझाया, परंतु वह नहीं मानी।

7. दिए गए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण पढ़-चुनकर खाली स्थान पर लिखिए।

	क्रिया-विशेषण
(क) आर्यन नीचे बैठकर पढ़ रहा है।	....
(ख) निधि जल्दी-जल्दी गृहकार्य कर रही है।	....
(ग) मैं कल दिल्ली जाऊँगा।	....
(घ) बच्चे अंदर बैठे हैं।	....
(ङ) रोहन बहुत बोलता है।	....

8. दिए गए विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) सावधान ! – ....

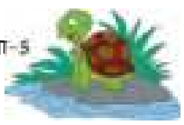

(ख) शाबाश! – ....

(ग) बाप रे! – ....

(घ) अरे! – ....

(ङ) हाय! – ....

9. विस्मयादिबोधक शब्दों का उनके भावों से मिलान कीजिए–

(क) ओह!	(i) आश्चर्य
(ख) काश!	(ii) खुशी
(ग) शाबाश!	(iii) चेतावनी
(घ) बाप रे!	(iv) दु:ख
(ङ) सावधान!	(v) इच्छा

10. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) शब्द का जो रूप किसी कार्य के होने के विषय में बताए, उसे कहते हैं–

☐ क्रिया ☐ काल ☐ धातु

(ख) काल के भेद होते हैं–

☐ दो ☐ तीन ☐ चार

(ग) वर्तमान काल में होता है–

☐ कार्य समाप्त हो चुका होता है। ☐ कार्य होने वाला होता है। ☐ कार्य चल रहा होता है।

11. दिए गए क्रिया-विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) धीरे-धीरे ....

(ख) हमेशा ....

(ग) रोज़ ....

(घ) ढेर-सा ....

(ङ) सुबह ....

(च) तेज़ ....

12. निर्देशानुसार काल बदलिए–

(क) संजय योगासन कर रहा था। (वर्तमान काल)

(ख) सुमंत बहुत सुंदर मूर्तियाँ बनाता है। (भविष्यत्काल)

(ग) प्रीति सुंदर नृत्य करेगी। (वर्तमान काल)

(घ) कल हमने पुस्तक प्रदर्शनी देखी। (भविष्यत्काल)

(ङ) पाँच दिसंबर को हमारा वार्षिकोत्सव होगा। (भूतकाल)

सोचें-विचारें

Critical Thinking

13. क्या समुच्चयबोधक शब्दों को रीतिवाचक क्रिया विशेषण में प्रयोग करते हैं? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

14. दिए गए अवतरण में से तीनों कालों को क्रमवार छाँटकर लिखिए।

होली भारत का प्रमुख धार्मिक त्योहार है। यह त्योहार जीवन में उमंग और उत्साह भर देता है। होली के अगले दिन रंग खेला जाता है, जिसे फाग कहते हैं। यह त्योहार होलिका और प्रह्लाद की याद में मनाया जाता है। होलिका को वरदान मिला था कि अग्नि उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। होलिका प्रह्लाद को जलाने के लिए आग में लेकर बैठी थीं। किंतु ईश्वर ने प्रह्लाद की रक्षा की और होलिका जलकर भस्म हो गई। इस वर्ष होली का पर्व मार्च के अंत में मनाया जाएगा। परंतु महामारी के कारण सावधानी बरती जाएगी। एक-दूसरे को दूर से ही फोन इत्यादि के माध्यम से शुभकामनाएँ दीजिएगा। लेकिन घरों में शुद्ध पकवान बनेंगे।

वर्तमानकाल के शब्द : ....

....

भूतकाल के शब्द : ....

....

भविष्यत्काल के शब्द : ....

....

प्रेरणादायक मूल्य

विपरीत परिस्थिति में भी हमें धैर्य से काम लेना चाहिए, क्योंकि धैर्य से मनुष्य में परिपक्वता का विकास होता है।

अध्याय 12

कारक (Case)

पढ़िए और समझिए

1. नेहा ब्रश चित्र बनाया।
2. कार्तिक पेंसिल खो गई।
3. अनीता खाना पकाना नहीं आता।
4. ये कपड़े राहुल हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों के सभी शब्द सही हैं, फिर भी ये अटपटे-से लग रहे हैं। इनसे पूरा अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है।

यदि इन वाक्यों को इस प्रकार लिखें तो पूरा अर्थ स्पष्ट हो जाएगा–

1. नेहा ने ब्रश से चित्र बनाया।
2. कार्तिक की पेंसिल खो गई।
3. अनीता को खाना पकाना नहीं आता ।
4. ये कपड़े राहुल के लिए हैं।

यहाँ ने, की, को और के लिए कारक-चिह्न हैं, जिनके प्रयोग से वाक्य अर्थपूर्ण बन गए हैं।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से पता चले, उसे कारक कहते हैं।

कारक संज्ञा एवं सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने का कार्य करते हैं। कारक-चिह्नों को विभक्ति या परसर्ग भी कहते हैं।

कारक-चिह्न संज्ञा या सर्वनाम का संबंध क्रिया तथा अन्य शब्दों से बताते हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कारक चिह्नों से अवगत कराएँ एवं उनका वाक्यों में प्रयोग करना सिखाएँ।

कारक के भेद–

कारक

कर्ता | कर्म | करण | संप्रदान | अपादान | संबंध | अधिकरण | संबोधन

ध्यान रखें – कारक का प्रयोग करते समय वाक्य का रूप बदल जाता है; जैसे–

राजेश दूध पी रहा है।

राजेश ने दूध पी लिया है।

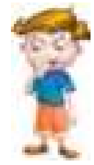

कारक	विभक्ति-चिह्न	उदाहरण
कर्ता	ने	अंशु ने पुस्तक पढ़ी।
कर्म	को	कुत्ते ने गाय को दौड़ा दिया।
करण	के साथ, से, के द्वारा	मैं अपने भाई के साथ विद्यालय गया।
संप्रदाय	के लिए, को	माँ राधिका के लिए ड्रेस लाई।
अपादान	से (अलग होना)	पेड़ से आम गिर पड़ा।
संबंध	का, के, की	चंचल की आवाज़ मधुर है।
अधिकरण	में, पर	डिब्बे में नमकीन रखी है।
संबोधन	हे! अरे!	अरे! ये दुर्घटना कब घटी?

आइए, पुनरावृति करें

- कारक – संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताता है।
- कारक के आठ भेद होते हैं– कर्ता, कर्म, करण, संप्रदाय, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कारक किसे कहते हैं?

(ख) कारक के भेदों की संख्या एवं नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) कारक के प्रयोग से वाक्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण सहित बताइए।

(ख) कारक के प्रमुख विभक्ति चिह्नों का प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए।

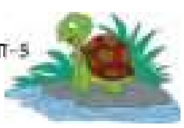

2. **दिए गए कारक चिह्नों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।**

(क) को ……………………………………

(ख) में ……………………………………

(ग) के लिए ……………………………………

(घ) ने ……………………………………

3. **उचित कारक-चिह्नों द्वारा खाली स्थान भरिए।**

(क) पेड़ …………… आम लगे हैं।

(ख) रश्मि …………… सुंदर फ्रॉक पहनी है।

(ग) आयुष, आर्यन …………… घर गया है।

(घ) घड़ी …………… अलार्म बजते ही आँख खुल गई।

4. **सही मिलान कीजिए।**

(क) संबोधन	(i) ने
(ख) संप्रदान	(ii) से
(ग) करण	(iii) को
(घ) कर्ता	(iv) के लिए
(ङ) कर्म	(v) हे! अरे!

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. **बच्चो! हम करण कारक में 'से' का प्रयोग करते हैं, तो वहीं अपादान कारक में भी 'ने' का प्रयोग करते हैं, ऐसा क्यों? सोच-समझकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. **दिए गए अवतरण को पढ़िए और उचित स्थान पर कारक चिह्न लगाकर दोबारा लिखिए।**

एक दिन बादशाह अकबर …………… एक अधिकारी …………… कड़ाके …………… ठंड …………… एक गरीब आदमी …………… शर्त लगाई। उसने गरीब आदमी …………… कहा, "यदि तुम तालाब के ठंडे पानी …………… रात भर खड़े रहो, तो मैं तुम्हें पचास अशर्फियाँ दूँगा।" गरीब आदमी …………… पैसे की बहुत ज़रूरत थी। इसलिए उसने यह शर्त मान ली।

प्रेरणादायक मूल्य

वाक्य में कारक शब्द का प्रयोग करने से वाक्य की सुंदरता बढ़ती है, ठीक उसी प्रकार हमें भी अच्छी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ताकि व्यक्तित्व की सुंदरता बढ़े।

अध्याय 13

शब्द-भंडार
(Vocabulary)

पढ़िए और समझिए

(क) पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को **पर्यायवाची** या **समानार्थी शब्द** कहते हैं।

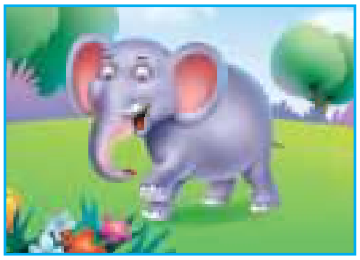

हाथी	गजराज	गज	कुंजर

सूर्य	रवि	भानु	दिवाकर

ऊपर बने चित्रों के नीचे लिखे शब्दों को ध्यान से पढ़िए। यह शब्द बोलने में भिन्न लगते हैं परंतु इनका अर्थ एक ही होता है। ऐसे शब्दों को **पर्यायवाची शब्द** कहते हैं।

आइए, कुछ अन्य पर्यायवाची शब्दों को भी जानें–

शब्द	पर्यायवाची	शब्द	पर्यायवाची
गंगा	सुरसरि, देवनदी, भागीरथी	सुबह	प्रातः, भोर, प्रभात
तालाब	सर, सरोवर	सूर्य	सूरज, दिनेश, दिनकर
चाँद	शशि, मयंक, सुधाकर	घर	भवन, गृह, आलय
आकाश	नभ, व्योम, आसमान	राजा	नृप, भूपति, नरेश
अध्यापक	शिक्षक, गुरु, आचार्य	शाम	सायं, संध्या, साँझ
अतिथि	मेहमान, आगंतुक	बगीचा	उद्यान, वाटिका, उपवन
झंडा	ध्वज, पताका, ध्वजा	सदा	सदैव, हमेशा, सर्वदा
दिन	दिवस, वासर, वार	माँ	माता, जननी, अंबा

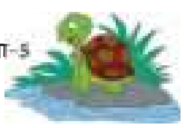

शब्द	पर्यायवाची	शब्द	पर्यायवाची
प्रातः	सुबह, सवेरा, प्रभात	किरण	अंशु, कर, रश्मि
चंद्रमा	इंदु, रजनीश, शशि, निशाकर	पवन	हवा, अनिल, वायु, समीर
पक्षी	खग, विहग, पतंग, द्विज	बादल	मेघ, घन, जलधर, पयोधर
मित्र	सखा, दोस्त, यार	जल	नीर, वारि, अंबु, सलिल
नदी	सरिता, सलिला, तटिनी	रात	रात्रि, निशा, रैन, रजनी
सूर्य	सूरज, दिनकर, दिवाकर	आँख	नेत्र, नयन, लोचन, दृग
आकाश	आसमान, अंबर, व्योम, शून्य	घर	गृह, सदन, निकेतन, आलय
दिन	दिवा, दिवस, वासर, वार	गुरु	शिक्षक, अध्यापक, आचार्य
वन	कानन, विपिन, अरण्य	पुत्री	सुता, नंदिनी, बेटी, आत्मजा
अमृत	सुधा, पीयूष, सोम	पृथ्वी	भू, धरा, भूमि
रात	रात्रि, रजनी, विभावरी	पुस्तक	ग्रंथ, पोथी, किताब
जग	लोक, जगत, संसार	शत्रु	बैरी, रिपु, अरि

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पर्यायवाची/समानार्थी शब्दों से आप क्या समझते हैं?

(ख) समानार्थी दिखाई देने वाले शब्दों में भी क्या सूक्ष्म अंतर होता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. रंगीन शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग कर पुनः लिखिए–

(क) गंगा के जल को अमृत के समान माना जाता है।

....

(ख) सारा संसार भगवान ने बनाया है।

....

(ग) शेर रात को दहाड़ता है।

....

(घ) हमें पृथ्वी पर वृक्ष लगाने चाहिए।

....

(ङ) घर में साँप देखकर मेरा मित्र डर गया।

....

2. दिए गए पर्यायवाची शब्दों का सही मिलान कीजिए–

दिन	नयन	पाहुना	लड़की
पुत्री	वार	नेत्र	करी
आँख	गज	सुता	आगुंतक
मेहमान	अंधकार	दिवस	तम
अँधेरा	बेटी	हस्ती	चक्षु
हाथी	अतिथि	तिमिर	वासर

(ख) विलोम शब्द (Antonyms)

विलोम शब्द से तात्पर्य है, विपरीत या उल्टा अर्थात् शब्द का उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द विपरीतार्थक कहलाते हैं।

लेकिन विलोम का अर्थ केवल विपरीत अर्थ देने वाला नहीं होता बल्कि तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों का विलोम बनाते समय विशेष ध्यान रखना होता है। शब्दानुसार ही विलोम शब्द बनाए जाते हैं; जैसे– 'कोमल' का विलोम 'कठोर' होगा, सख्त नहीं। इसी तरह 'दिवस' का विलोम 'रात्रि' होगा, रात नहीं।

आइए, अब कुछ विलोम शब्द पढ़ें–

शब्द	×	विलोम	शब्द	×	विलोम	शब्द	×	विलोम
न्याय	×	अन्याय	सच्चा	×	झूठा	धर्म	×	अधर्म
देवता	×	दानव	अपेक्षा	×	उपेक्षा	क्षुद्र	×	विशाल
सदाचारी	×	दुराचारी	आस्तिक	×	नास्तिक	स्थायी	×	अस्थायी
आरंभ	×	अंत	निर्धन	×	धनी	अंधकार	×	प्रकाश
निर्बल	×	सबल	आकाश	×	पाताल	उपकार	×	अपकार
कृतज्ञ	×	कृतघ्न	मुक्ति	×	बंधन	उन्नति	×	अवनति

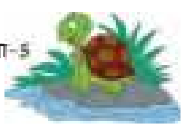

शब्द	×	विलोम	शब्द	×	विलोम	शब्द	×	विलोम
उदय	×	अस्त	आदर	×	निरादर	उन्नति	×	अवनति
क्रेता	×	विक्रेता	विद्वान	×	मूर्ख	सम	×	विषम
रोगी	×	निरोगी	रक्षक	×	भक्षक	सुगम	×	दुर्गम
लघु	×	विशाल	हँसना	×	रोना	राग	×	द्वेष
हर्ष	×	विषाद	सम्मान	×	अपमान	स्वतंत्र	×	परतंत्र
शुभ	×	अशुभ	राजा	×	रंक	पक्ष	×	विपक्ष
पुरातन	×	अधुनातन	लाभ	×	हानि	आदान	×	प्रदान
स्वाधीन	×	पराधीन	आरंभ	×	अंत	स्वर्ग	×	नरक
आशा	×	निराशा	स्वस्थ	×	अस्वस्थ	आस्तिक	×	नास्तिक

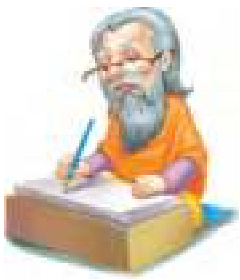

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए एक प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) विलोम शब्दों का क्या अर्थ है?

(ख) तद्भव और तत्सम शब्दों के विलोम बनाते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए शब्दों के सही विलोम शब्द लिखिए।

आकाश	×	…………………………	उपकार	×	…………………………
सुगम	×	…………………………	अग्रज	×	…………………………
स्वतंत्र	×	…………………………	पराजय	×	…………………………
प्रकाश	×	…………………………	दुष्ट	×	…………………………

2. दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्दों के विलोम शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरिए।

(क) प्रत्येक मानव स्वाधीन रहना चाहता है ………………………… नहीं।

(ख) सुमेधा और उसकी बहन में आकाश ………………………… का अंतर है।

(ग) परिवार में बड़ों का आदर करो ………………………… नहीं।

(घ) सूर्य पूरब में उदय होता है और ………………………… में …………………………।

(ङ) रक्षक का स्थान सदा ऊँचा है और ………………………… का ………………………… ।

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले एक शब्द को '**अनेक शब्दों के लिए एक शब्द**' या '**वाक्यांशबोधक**' शब्द कहते हैं। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा सुंदर और प्रभावशाली बनती है।

तो आइए, अब कुछ और वाक्यांशबोधक शब्दों को जानने का प्रयास करते हैं–

अनेक शब्द (वाक्यांश)	एक शब्द
• काम से जी चुराने वाला	कामचोर
• जिसका आचरण बुरा हो	दुराचारी
• जो सहन न किया जा सके	असह्य
• जिसकी उपमा न दी जा सके	अनुपम
• जो अवसर के अनुसार बदलता रहता है	अवसरवादी
• जो मधुर बोलता हो	मृदुभाषी
• जिसका अंत न हो	अनंत
• जिसका जन्म अग्र (पहले) हुआ हो	अग्रज
• जिसका जन्म अनु (बाद में) हुआ हो	अनुज
• जल में जन्म लेने वाला	जलज
• जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है	कुलीन
• जल में रहने वाला	जलचर
• जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्‌वितीय
• जिसे करना आवश्यक हो	अनिवार्य
• जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
• जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
• जो राष्ट्र का हो	राष्ट्रीय
• कम खर्च करने वाला	मितव्ययी
• जो कम खाता हो	अल्पाहारी
• जिसे किसी का भय न हो	निर्भय
• पति–पत्नी का जोड़ा	दम्पति
• देखने वाला	दर्शक
• जो अधिक बोलता हो	वाचाल
• जिसके आने की तिथि न हो	अतिथि
• दूसरों के पीछे चलने वाला	अनुचर

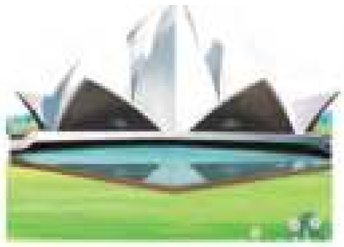

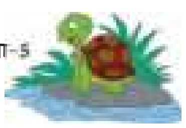

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का अर्थ बताइए।

(ख) अध्यापक और पुस्तकालय शब्दों के लिए अनेक शब्द बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए अनेक शब्दों के बदले एक शब्द लिखिए।

(क) जिसकी चार भुजाएँ हों। ....

(ख) जिसे ईश्वर पर भरोसा हो। ....

(ग) जिसके समान कोई दूसरा न हो। ....

(घ) पंद्रह दिन में एक बार होने वाला। ....

2. दिए गए एक शब्द के बदले अनेक शब्द लिखिए।

(क) कामचोर – ....

(ख) नास्तिक – ....

(ग) आज्ञाकारी – ....

(घ) पुस्तकालय – ....

(ङ) साप्ताहिक – ....

(च) निर्भय – ....

(घ) श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द (Homonym)

श्रुति– सुनना, सम–समान, भिन्न–अलग, अर्थ– मतलब अर्थात सुनने में समान, परंतु भिन्न अर्थ वाले शब्द। अत: ऐसे शब्द जो सुनने में तो समान लगते हैं, किंतु अर्थ में काफी भिन्नता लिए होते हैं, उन्हें **श्रुतिसम-भिन्नार्थक** शब्द कहते हैं।

आइए, ऐसे कुछ शब्दों के बारे में जानते हैं–

शब्द		अर्थ
• शोक	–	दु:ख
शौक		रुचि
• उतर	–	उतरना
उत्तर		दिशा

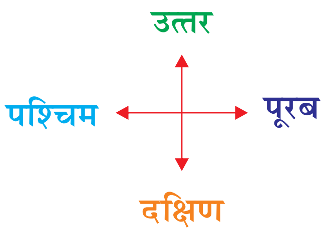

- अचार – एक खाद्य पदार्थ
  आचार – आचरण (व्यवहार)
- इस्त्री – प्रेस
  स्त्री महिला/औरत
- निधन – मृत्यु
  निर्धन गरीब
- राज – शासन
  राज़ रहस्य
- सुत – बेटा
  सूत धागा
- छत्र – छाता
  क्षत्र क्षत्रिय
- आसमान – आकाश
  असमान बराबर न होना
- कड़ाई – सख्ती
  कढ़ाई सूई-धागे की कला
- शाम – संध्या
  श्याम काला
- कोष – खज़ाना
  कोश संग्रह
- कुल – वंश
  कूल किनारा

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'श्रुतिसम-भिन्नार्थक' का अर्थ समझाइए।

(ख) 'शोक' और 'शौक' में क्या अंतर है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. उचित शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) हमें .... दुखियों की सहायता करनी चाहिए। (दीन, दिन)

(ख) राम की .... का नाम सीता था। (पत्नी, स्त्री)

(ग) .... में अचानक बादल छा गए। (असमान, आसमान)

(घ) मुझे कहानियाँ पढ़ने का .... है। (शोक, शौक)

(ङ) कानून की दृष्टि में सभी .... हैं। (समान, सामान)

2. दिए गए शब्दों से इस प्रकार वाक्य बनाइए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

(क) कोश – ....

कोष – ....

(ख) कर्म – ....

क्रम – ....

(ग) सुत – ....

सूत – ....

(घ) उतर – ....

उत्तर – ....

(ङ) अनेकार्थी शब्द (Words with Different Meanings)

जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें **अनेकार्थी शब्द** कहते हैं।

आइए, कुछ अनेकार्थी शब्दों के बारे में जानते हैं–

शब्द		अर्थ
अक्षर	–	वर्ण, अविनाशी, ब्रह्मा
आँख	–	नयन, परख, संतान
गुरु	–	शिक्षक, भार, बड़ा, श्रेष्ठ
वर	–	दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ
गति	–	चाल, हालत, मोक्ष
रक्त	–	लहू, लाल रंग, केसर
अंबर	–	आकाश, कपड़ा
नाग	–	सांप, हाथी
काल	–	समय, मृत्यु, यम
रस	–	आनंद, फल का रस
वार	–	दिन, आक्रमण
व्यंजन	–	पकवान, वर्णमाला के अक्षर
सूत	–	धागा, सारथी, डोरी
स्वर	–	आवाज़, वर्णमाला के अक्षर
दल	–	पत्ता, समूह

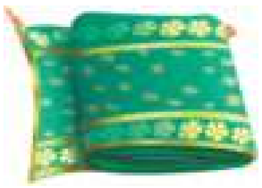

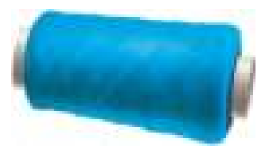

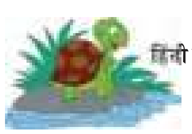

आम – एक फल, सामान्य
मुद्रा – सिक्का, अँगूठी
जड़ – पेड़-पौधे की जड़, मूर्ख
बाल – केश, बालक
भेद – रहस्य, प्रकार
वंश – कुल, बाँसुरी
नाना – माँ के पिता, अनेक
पट – दरवाज़ा, कपड़ा

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) अनेकार्थी शब्द किन्हें कहते हैं?

(ख) 'तीर' और 'अर्थ' शब्दों के दो-दो अर्थ बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए शब्दों से दो-दो वाक्य बनाइए कि उनके दो अलग-अलग अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।

(क) भाग – 1. ....
2. ....

(ख) गुरु – 1. ....
2. ....

(ग) जड़ – 1. ....
2. ....

2. दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।

(क) आम – .... (ख) फल – ....

(ग) पत्र – .... (घ) अंक – ....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार शब्द-भंडार हमारी भाषा को समृद्ध बनाता है, उसी प्रकार वैयक्तिक मूल्यों का भंडार हमारे जीवन को प्रभावशाली बनाता है।

अध्याय 14

विराम-चिह्न
(Punctuation Marks)

पढ़िए और समझिए

भिन्न-भिन्न प्रकार के भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए वाक्यों के बीच में जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

विराम का अर्थ है 'रुकना' या 'ठहरना'। वाक्य को लिखते, बोलते समय बीच-बीच में थोड़ा-बहुत रुकना पड़ता है जिससे भाषा स्पष्ट, अर्थवान एवं भावपूर्ण हो जाती है। लिखित भाषा में इस ठहराव को दिखाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

मुख्य विराम-चिह्न–

1. **पूर्ण विराम (।) :** 'पूर्ण विराम' अर्थात् पूरी तरह रुकना। वाक्य पूरा होने पर अंत में पूर्ण विराम लगाया जाता है। यह चिह्न प्रश्नवाचक तथा विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर प्रत्येक वाक्य में लगाया जाता है; जैसे–

   यह सब सामान बाहर ले जाओ।   राहुल जल्दी सो गया।

2. **अल्प विराम (,) :** 'अल्प विराम' अर्थात् थोड़ा रुकना। वाक्य बोलते समय जब हम थोड़ी देर के लिए रुकते हैं, तब अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है।

अल्प विराम का प्रयोग अनेक परिस्थितियों में किया जाता है–

एक जैसे शब्दों को अलग करने के लिए	– कल मैं बाज़ार से कॉपी, पेन, पेंसिल, रबड़ और ड्राइंग का सामान लाया।
वाक्यांशों को जोड़ने के लिए	– मैंने नहाकर पूजा की, नाश्ता किया और विद्यालय चली गई।
समुच्चयबोधक से पहले	– मनीष ने बहुत मनाया, परंतु महिमा नहीं मानी।
कथन को स्पष्ट करने के लिए	– प्रधानाचार्या ने बताया, 25 नवंबर को हमारा वार्षिकोत्सव होना निश्चित हुआ है।
संबोधन तथा 'हाँ' या 'नहीं' के बाद	– हाँ, माँ बहुत बीमार हैं।

3. अर्ध विराम (;) : बोलते अथवा लिखते समय एक बड़े वाक्य में कई छोटे वाक्यों को जोड़ने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

डॉ० अब्दुल कलाम महान वैज्ञानिक तो थे ही; महान व्यक्ति भी थे।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) : वाक्यों में जहाँ भी प्रश्न पूछा जाता है, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

ये तुम क्या खा रहे हो?   यह कौन खड़ा है?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!) : मन के भाव यानी हर्ष, खुशी, शोक, भय, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को प्रकट करने के लिए वाक्यों में इन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

अरे! यह क्या हो गया।   हाय! मेरी आइसक्रीम गिर गई।

6. योजक चिह्न (–) : तुलना करने वाले शब्दों तथा शब्द–युग्मों के साथ योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

भाई–बहन, माता–पिता, स्त्री–पुरुष, थोड़ा–सा, छोटा–सा आदि।

7. उद्धरण चिह्न (‘ ’) (“ ”) : ये चिह्न दो प्रकार के होते हैं–

इकहरा उद्धरण चिह्न (‘ ’) – किसी नाम, उपनाम आदि को उभारने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

रामधारी सिंह ‘दिनकर’ महान कवि थे।

दुहरा उद्धरण चिह्न (“ ”) – इसका प्रयोग किसी की कही गई बात को ज्यों–का–त्यों प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है; जैसे–

भैया ने दीदी से कहा, “चलो, मेला घूम आते हैं।”

8. लाघव चिह्न (०) : शब्दों का संक्षिप्त रूप दिखाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

डॉक्टर – डॉ०, प्रश्न – प्र०, टेलीविज़न – टी०वी० आदि।

आइए, पुनरावृति करें

- लिखते समय विराम प्रकट करने वाले चिह्न विराम–चिह्न कहलाते हैं।
- पूर्ण विराम (।) वाक्य के अंत में लगता है।
- अल्प विराम (,) कई शब्दों को अलग करने के लिए लगाया जाता है।
- अर्ध–विराम (;) एक से अधिक छोटे वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होता है।
- प्रश्नवाचक चिह्न (?) प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग होता है।

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को विराम चिह्नों के बारे में तथा चिह्नों को कब कहाँ प्रयोग करना है, का अभ्यास कराएँ।

- विस्मयादिबोधक (!) भाव प्रकट करने के लिए प्रयोग होता है।
- योजक चिह्न (–) शब्द युग्मों के मध्य तथा तुलना करने के लिए किया जाता है।
- इकहरे उद्धरण चिह्न (' ') किसी के नाम को उभारने के लिए प्रयुक्त होता है।
- दोहरे उद्धरण चिह्न (" ") किसी बात को ज्यों–का–त्यों लिखने के लिए प्रयोग होता है।
- लाघव चिह्न (०) शब्द का संक्षिप्त रूप दिखाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) विराम शब्द का क्या अर्थ है? विराम चिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

(ख) इकहरे और दोहरे उद्धरण चिह्न में अंतर बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए वाक्यों में उचित विराम–चिह्न लगाइए।

(क) ध्रुव दामिनी यशस्वी और यामिनी चिड़ियाघर देखने गए

(ख) छि: छि: कितनी मक्खियाँ भिनक रही हैं

(ग) ओह आज भीषण गर्मी है

2. सही मिलान कीजिए।

(क)	लाघव चिह्न	(i)	(,)
(ख)	प्रश्नवाचक चिह्न	(ii)	(०)
(ग)	विस्मयादिबोधक चिह्न	(iii)	(?)
(घ)	अर्ध विराम	(iv)	(!)
(ङ)	पूर्ण विराम	(v)	(;)
(च)	अल्प विराम	(vi)	(।)

3. दिए गए विराम चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

(क) लाघव चिह्न ....

(ख) विस्मयादिबोधक ....

(ग) अल्प विराम ....

(घ) पूर्ण विराम ....

4. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) अर्ध विराम–

(i) ☐ “ ” (ii) ☐ ‘ ’ (iii) ☐ ;

(ख) पूर्ण विराम–

(i) ☐ , (ii) ☐ ; (iii) ☐ ।

(ग) योजक–

(i) ☐ ० (ii) ☐ – (iii) ☐ ।

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. जरा सोचिए! यदि वाक्य को लिखते समय विराम चिह्न का प्रयोग नहीं होता तो वाक्य का स्वरूप कैसा होता है?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. दिए गए अवतरण को पढ़िए और उचित विराम-चिह्न लगाकर पुनः लिखिए।

महात्मा बुद्ध मुस्काए और मधुर स्वर में बोले मैं तो ठहर गया भला तू कब ठहरेगा अंगुलिमाल ठगा सा रह गया उसने भगवान बुद्ध की तरफ देखा महात्मा बुद्ध के चेहरे पर दृढ़ विश्वास था बड़ी शांति थी उनकी आँखों में करुणा थी अंगुलिमाल जिन लोगों को रोकता था वे थर थर काँपते थे उन्हें सताने में उसे बड़ा मज़ा आता था लेकिन ये दुबला पतला संन्यासी तो उससे बिल्कुल नहीं डर रहा था वह बोला हे संन्यासी तुझे बिल्कुल डर नहीं लगता देखो मैंने कितने लोगों को मार कर अंगुलियों की माला बनाई है अगर मैं चाहूँ तो तुम्हें.......

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार वाक्य में रुकने के लिए विराम-चिह्न का प्रयोग करते हैं, ठीक उसी प्रकार जीवन में भागते ही नहीं रहना चाहिए। थोड़ा विराम देकर सोच-समझकर विचार करना चाहिए।

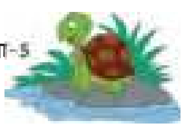

अध्याय 15

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)

पढ़िए और समझिए

मुहावरे का शाब्दिक अर्थ अभ्यास करना होता है। आपसी बातचीत के मध्य भाषा को प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए कभी–कभी हम कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनसे विशिष्ट अर्थ प्रकट होता है; जैसे–

जो वाक्यांश साधारण अर्थ न देकर विशिष्ट अर्थ प्रकट करते हैं, वे मुहावरे कहलाते हैं।

कमर कसना – किसी काम के लिए पूरी तरह तैयार होना।

थाली का बैंगन –अस्थिर विचारधारा वाला व्यक्ति।

उपर्युक्त जो वाक्यांश लिखे हैं उनमें इनका शाब्दिक अर्थ चित्रों के द्वारा प्रकट हो रहा है। लेकिन इनका विशेष अर्थ है, कमर कसना– किसी काम के लिए पूरी तरह तैयार होना। थाली का बैंगन– अस्थिर विचारधारा वाला व्यक्ति। ये ही मुहावरे हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में प्रवाह, रोचकता, सरलता तथा चमत्कार आता है। इनके प्रयोग से भाषा जीवंत तथा मर्मस्पर्शी हो जाती है।

कुछ मुहावरे अर्थ एवं प्रयोग सहित नीचे दिए जा रहे हैं उन्हें पढ़िए तथा याद कीजिए–

1. **अँगूठा दिखाना** – साफ़ मना करना।
   मैंने शालू से पेंसिल माँगी तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

2. अंधे की लाठी – एकमात्र सहारा।
मोहन अपने माता-पिता के लिए अंधे की लाठी है।

3. आग-बबूला होना – अत्यधिक गुस्से में होना।
शैतानी करते हुए सोनू के द्वारा शीशा टूट जाने पर मम्मी उस पर आग बबूला हो गई।

4. नाक में दम करना – परेशान करना।
रविवार के दिन बच्चे शोर मचाकर मम्मी की नाक में दम कर देते हैं।

5. हाथ मलना – पछताना।
तुम अपनी पढ़ाई करो, वरना परीक्षा में हाथ मलते रह जाओगे।

6. बाएँ हाथ का खेल – सरल कार्य।
महेंद्र सिंह धोनी के लिए अधिकाधिक रन बनाना बाएँ हाथ का खेल है।

7. चंपत होना – भाग जाना।
देखते-ही-देखते चोर चंपत हो गया।

8. टाँग अड़ाना – रुकावट डालना।
सुरेश को दूसरों की बातों में टाँग अड़ाने की आदत है।

9. ठहाका मारना – ज़ोर से हँसना।
सिम्मी का चुटकुला सुनकर सब ठहाका मारकर हँस पड़े।

10. होश उड़ जाना – घबरा जाना।
अपनी दुकान पर चोरी हो जाने की खबर सुनकर पन्नालाल जी के होश उड़ गए।

11. हाथ बँटाना – सहायता करना।
कमला अपनी मम्मी के साथ घर के कामों में हाथ बँटाती है।

12. आँख लगना – सो जाना।
टी.वी. देखते-देखते नाना जी की आँख लग गई।

13. छक्के छुड़ाना – बुरी तरह हराना।
भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया टीम के छक्के छुड़ा दिए।

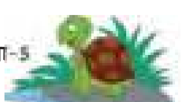

14. अगर-मगर करना – टाल-मटोल करना।

पापा ने सूरज को सामान लाने के लिए कहा तो वह अगर-मगर करने लगा।

15. पत्थर की लकीर होना – पक्की बात कहना।

भीष्म पितामह की हर बात पत्थर की लकीर की तरह थी।

16. श्री गणेश करना – काम शुरू करना।

भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्य का श्री गणेश करने से पहले ईश्वर की उपासना की जाती है।

17. उल्टी गंगा बहाना – रीति के विरुद्ध काम करना।

श्याम सिंह तो नास्तिक है, उससे सुंदरकांड का पाठ करवाने का प्रयास करना तो उल्टी गंगा बहाने के समान है।

18. ज़मीन पर पैर न रखना – घमंड करना।

सोनम जब से इंजीनियर बनी है तब से उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे हैं।

19. घोड़े बेचकर सोना – बेफिक्री की नींद सोना।

परीक्षा समाप्त होने के बाद से मोहित घोड़े बेचकर सो रहा है।

20. कलंक लगना – बदनाम होना।

सेठ जी रिश्वत लेते पकड़े गए। उनके ऊपर तो न मिटने वाला कलंक लग गया।

लोकोक्तियाँ – लोकोक्ति का अर्थ है– लोक की उक्ति अर्थात् लोगों के द्वारा कहे हुए प्रचलित कथन। भाषा रचना में लोकोक्ति का प्रयोग करने से रोचकता आती है और व्यवहार-ज्ञान की शिक्षा भी इनसे मिल जाती है; जैसे– यहाँ 'चिराग तले अँधेरा' का अर्थ है 'किसी चीज़ के निकट रहकर भी वंचित रहना।'

इस प्रकार हम कहते हैं कि –

जब कोई वाक्य स्वतंत्र रूप से प्रयोग होकर अपने साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करता है तब उसे **लोकोक्ति** कहते हैं।

लोकोक्ति का दूसरा नाम कहावत भी है। कुछ लोकोक्तियाँ अर्थ एवं प्रयोग सहित नीचे दी जा रही हैं उन्हें पढ़ो तथा याद करो।

1. **ऊँची दुकान फीका पकवान** – झूठी प्रसिद्धि।
   सुखीराम हलवाई की मिठाई तो बहुत बेस्वाद है, वह तो ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात है।

2. **एक अनार सौ बीमार** – चीज़ कम, माँग अधिक।
   नौकरी पाँच हैं और उम्मीदवार पचास। इसे कहते हैं एक अनार सौ बीमार।

3. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** – बहुत परिश्रम से थोड़ा लाभ।
   इतने परिश्रम के बाद रमन को दस में से चार ही अंक मिले। इसे कहते हैं खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

4. **दूध का दूध, पानी का पानी** – सही न्याय।
   उसने मज़दूर के 10 ₹ काटे थे, अब उसके वेतन में 100 ₹ की कटौती होने पर दूध का दूध, पानी का पानी हो गया।

5. **जिसकी लाठी, उसकी भैंस** – बलवान की ही जीत होती है।
   आजकल गरीब व्यक्ति को कोई नहीं पूछता। आजकल तो जिसकी लाठी उसकी भैंस।

6. **एक पंथ दो काज** – एक काम से दोहरा लाभ।
   मैं परीक्षा देने दिल्ली गया तो मैंने लाल किला भी देख लिया। इसे कहते हैं एक पंथ दो काज।

7. **आगे कुआँ पीछे खाई** – सब तरफ मुसीबत।
   शेर को सामने अचानक देखते ही गगन पीछे की ओर भागा लेकिन पीछे नदी देखकर घबरा गया क्योंकि उसको तैरना नहीं आता था। उसके लिए तो आगे कुँआ पीछे खाई वाली बात हो गई।

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को पाठ में दिए गए मुहावरे एवं लोकोक्तियों का विस्तारपूर्वक अर्थ सहित बताएँ एवं दोनों के बीच के अंतर को वाक्य निर्माण द्वारा समझाएँ।

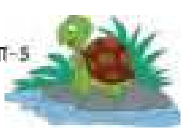

आइए, पुनरावृति करें

- जब कोई शब्द या वाक्यांश निरंतर प्रयोग में आने के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ का बोध कराए, तब उसे मुहावरा कहते हैं।
- लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहा जाता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मुहावरे क्या होते हैं?
(ख) मुहावरे से भाषा में क्या परिवर्तन आता है?
(ग) लोकोक्ति से आप क्या समझते हैं?
(घ) मुहावरे और लोकोक्ति में क्या अंतर होता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. उचित मुहावरों द्वारा वाक्य पूरे कीजिए।

(क) आज तो आकाश से .... हैं।
(ख) सुहेल तो आस्तीन .... है।
(ग) गणेश किसी के काम नहीं आता, बस अपना .... है।
(घ) एक .... की शक्ति अतुलनीय होती है।

2. दिए गए मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) चकमा देना ....
(ख) कान काटना ....
(ग) आस्तीन का साँप ....
(घ) खाक छानना ....
(ङ) आग में कूदना ....

3. सही मिलान कीजिए।

(क)	आँखें बिछाना	(i)	एकमात्र सहारा
(ख)	उँगली उठाना	(ii)	भड़काना
(ग)	कान भरना	(iii)	प्रतीक्षा करना
(घ)	आग लगाना	(iv)	निंदा करना
(ङ)	अंधे की लाठी	(v)	चुगली करना

4. उचित लोकोक्तियों द्वारा वाक्य पूरे कीजिए।

(क) सेठ ने नौकर को फँसाने की पूरी कोशिश की, परंतु वह निर्दोष साबित हुआ – सच ही है साँच ....

(ख) एक माह पूर्व ही पत्नी को कैंसर बताया गया और आज नौकरी छूट गई, इसे ही कहते हैं कंगाली ....

(ग) मैकेनिक से ए.सी. ठीक नहीं हुआ, कमी औज़ारों की बता रहा है, नाच ....

(घ) चोरों ने बहुत प्रयास किया, परंतु छोटे-मोटे सामान के अतिरिक्त कुछ हाथ न लगा, खोदा ....

5. सही मिलान कीजिए।

(क)	नाच न जाने आँगन टेढ़ा	(i)	मेहनत अधिक लाभ कम
(ख)	जिसकी लाठी उसकी भैंस	(ii)	घर की फूट विनाश का कारण
(ग)	राई का पहाड़ बनाना	(iii)	अपनी कमी छुपाने के बहाने खोजना
(घ)	घर का भेदी लंका ढाए	(iv)	शक्तिशाली का बोलबाला
(ङ)	खोदा पहाड़ निकली चुहिया	(v)	बात का बतंगड़ बनाना

सोचें-विचारें
Critical Thinking

6. लोकोक्तियाँ, मुहावरों से किस प्रकार भिन्न हैं? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में
Brain Storming Activity

7. दी गई लोकोक्तियों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

चोर की दाढ़ी में तिनका ....

ऊँची दुकान फीका पकवान ....

जिसकी लाठी उसकी भैंस ....

कंगाली में आटा गीला ....

प्रेरणादायक मूल्य

मुहावरे भाषा को समृद्ध करते हैं, जबकि लोकोक्ति लोक में प्रचलित होती हैं, इसलिए हमें इनका प्रयोग भाषा को समृद्ध करने के लिए करना चाहिए।

अध्याय 16

अपठित गद्यांश
(Unseen Passage)

पढ़िए और समझिए

अपठित गद्यांश में 'अपठित' का अर्थ है– 'पहले से न पढ़ा गया' और 'गद्यांश' का अर्थ है 'गद्य का अंश'। अतः

पहले से न पढ़ा गया गद्य का अंश अपठित गद्यांश कहलाता है।

अपठित गद्यांश के आधार पर विद्यार्थियों से उन पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं और इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को अपनी भाषा में देने होते हैं।

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- सर्वप्रथम गद्यांश को दो-तीन बार ध्यान से पढ़ना चाहिए।
- क्रम से सभी प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से ढूँढने चाहिए।
- गद्यांश की मुख्य बातों व कठिन शब्दों को पेंसिल से रेखांकित कीजिए और दोबारा ध्यान ने पढ़िए।
- भाषा संक्षिप्त व सरल होनी चाहिए।
- वर्तनी शुद्ध होनी आवश्यक है।
- शीर्षक गद्यांश के ऊपर ही आधारित होना चाहिए।

दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए एवं प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. मानव जीवन में समय का बहुत महत्व है, लेकिन जो व्यक्ति समय की महत्ता नहीं समझता है, वह जीवन भर पछताता ही रहता है, क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। समय की उपयोगिता को समझना और उस पर अमल करना बहुत आवश्यक है। जो व्यक्ति समय के महत्व को समझते हैं और अपना सारा जीवन अच्छे और कल्याणकारी कामों में लगाते हैं, उनका जीवन सफल हो जाता है, वे अपने लिए सुख, समृद्धि और खुशहाली का मार्ग निकाल ही लेते हैं। जितने भी महापुरुष या बुद्धिजीवी इस धरती पर हुए हैं, उन्होंने समय का सही प्रकार से उपयोग किया है। जो समय का दुरुपयोग करते हैं, वे सदा परेशानियों से ग्रस्त रहते हैं, ऐसे लोगों के जीवन में सुख-चैन होता ही नहीं। वे अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और जीवन भर पछताते रहते हैं, उनके हाथ कुछ नहीं आता है। उनका जीवन घुटन और पीड़ा में ही समाप्त हो जाता है। वे जब तक जीवित रहते हैं, समाज और देश के लिए बोझ ही बने रहते हैं।

दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–1. मानव जीवन में समय का क्या महत्व है? समय की उपयोगिता न समझने से क्या होता है?

प्रश्न–2. महापुरुष और बुद्धिजीवी क्या करते हैं?

प्रश्न–3. समय का दुरुपयोग करने वाले व्यक्तियों के साथ क्या होता है?

उत्तर–1. मानव जीवन में समय का बहुत महत्व है, जो समय की महत्ता को नहीं समझता, वह जीवन भर पछताता ही रहता है।

उत्तर–2. महापुरुष और बुद्धिजीवियों ने सदा समय का सदुपयोग किया है, अपने समय को सार्थक तथा कल्याणकारी कार्यों में लगाकर अपना जीवन सार्थक किया है।

उत्तर–3. समय का दुरुपयोग करने वाले सदा पछताते रहते हैं और परेशानियों से ग्रस्त रहकर समाज और देश के लिए बोझ बन जाते हैं।

2. भारत त्योहारों का देश है, यहाँ प्रत्येक माह कोई–न–कोई त्योहार अवश्य मनाया जाता है, त्योहार अपने संग उमंग और खुशियाँ लेकर आते हैं तथा त्योहारों का मौसम आते ही हमारा जीवन उमंग और उत्साह से भर जाता है। दैनिक जीवन की व्यस्तता से हटकर ये हमें हमारे मित्रों, संबंधियों आदि के करीब ले आते हैं। भारत में मुख्य रूप से दो प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं– राष्ट्रीय और धार्मिक। सभी धर्मों के अपने–अपने त्योहार होते हैं, परंतु भारतवर्ष की यह विशेषता है कि यहाँ सभी लोग सभी पर्व मिलजुल कर मनाते हैं। जब भी ये त्योहार आते हैं, अपने साथ ढेरों खुशियाँ लेकर आते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हमारी वेश–भूषा, जाति–धर्म भले ही अलग–अलग हैं, परंतु हम भारतवासी हैं और उससे भी बढ़कर मनुष्य हैं। अतः त्योहारों के माध्यम से हमें आपसी प्रेम व भाईचारा बनाए रखना चाहिए।

दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–1. भारतवर्ष को त्योहारों का देश क्यों कहते हैं?

प्रश्न–2. भारतवर्ष में कितने प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं?

प्रश्न–3. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर–1. भारत में प्रत्येक माह में कोई–न–कोई त्योहार मनाया जाता है।

उत्तर–2. भारतवर्ष में दो प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं– राष्ट्रीय और धार्मिक।

उत्तर–3. 'त्योहारों का देश: भारत'

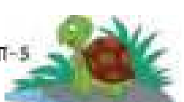

3. वैशाखी का त्योहार संपूर्ण पंजाब में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस दिन लोग नदियों तथा सरोवरों में स्नान करते हैं। नई फसल आने के कारण किसानों में अत्यंत हर्षोल्लास होता है। किसान भांगड़ा नृत्य करके अपनी खुशी प्रकट करते हैं। भारतीय पंचांग (पत्रा) के अनुसार इस दिन नववर्ष का शुभारंभ माना जाता है। इस दिन कोई भी नया कार्य शुरू करना विशेष शुभ माना जाता है।

प्रश्न 1. वैशाखी के दिन लोग कहाँ स्नान करते हैं?

उत्तर: वैशाखी के दिन लोग पवित्र नदियों तथा सरोवरों में स्नान करते हैं।

प्रश्न 2. वैशाखी के दिन किसानों में विशेष उल्लास क्यों होता है?

उत्तर: नई फसल आने के कारण किसानों में अत्यंत हर्षोल्लास होता है।

प्रश्न 3. किसान अपनी खुशी किस प्रकार प्रकट करते हैं?

उत्तर: किसान भांगड़ा नृत्य करके अपनी खुशी प्रकट करते हैं।

प्रश्न 4. भारतीय पंचांग (पत्रा) के अनुसार इस दिन किसका शुभारंभ होता है?

उत्तर: भारतीय पंचांग के अनुसार इस दिन नववर्ष का शुभारंभ माना जाता है।

प्रश्न 5. वैशाखी के दिन क्या करना शुभ माना जाता है?

उत्तर: वैशाखी के दिन नया कार्य करना शुभ माना जाता है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को अपठित गद्यांश के संबंध में संपूर्ण जानकारी प्रदान करें तथा गद्यांश को पढ़कर उचित शीर्षक के चयन का तरीका भी बताएँ।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

दिए गए अपठित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) क्रिकेट मेरा मनपसंद खेल है। इसमें दो टीमें खेलती हैं। एक दिन के क्रिकेट में दोनों टीमें एक-एक पारी खेलती हैं। एक टीम के खिलाड़ी गेंद फेंककर बल्लेबाज़ को परास्त करने का प्रयत्न करते हैं। बल्लेबाज़ परास्त हुए बिना गेंद को दूर तक मारते हैं और रन लेते हैं। जो टीम अधिक रन लेती है वही टीम जीतती है। सचिन तेंदुलकर, कपिल देव, सुनील गावस्कर आदि मशहूर भारतीय खिलाड़ी हैं।

1. खिलाड़ी गेंद फेंककर किसे आउट करने की कोशिश करते हैं?

   ....

2. क्रिकेट में कितनी टीमें खेलती हैं?

   ....

3. किन्हीं दो भारतीय खिलाड़ियों के नाम लिखिए।

   ....

(ख) भारत देश ऋतुओं का देश है। यहाँ वर्ष भर में छः ऋतुएँ– ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर और बसंत होती हैं। बसंत ऋतु को यहाँ 'ऋतुओं का राजा' माना जाता है और वर्षा ऋतु को 'ऋतुओं की रानी'। वर्षा ऋतु में मेंढक टर्राने लग जाते हैं। चारों तरफ हरियाली छा जाती है। पपीहा 'पी-पी' और मोर 'पिऊ-पिऊ' करने लग जाता है। वर्षा ऋतु किसानों के लिए वरदान होती है। इस ऋतु में कई प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं; जैसे-धान, मक्की, ज्वार, बाजरा आदि।

1. वर्षा ऋतु में कौन-से जीव टर्राने लग जाते हैं?

   ....

2. 'ऋतुओं की रानी' किसे कहा जाता है?

   ....

3. वर्षा ऋतु में कौन-सी फसलें उगाई जाती हैं?

   ....

प्रेरणादायक मूल्य

हमें समय के महत्व को समझना चाहिए क्योंकि समय किसी के लिए नहीं रुकता।

अध्याय 17

संवाद-लेखन
(Dialogue Writing)

पढ़िए और समझिए

संवाद का शाब्दिक अर्थ बातचीत है। इसे वार्तालाप भी कहा जाता है। जब हम अपनी बात, विचार अथवा भावनाएँ बोलकर अथवा लिखकर किसी दूसरे तक पहुँचाते हैं, तो उसे संवाद कहते हैं।

वार्तालाप कई प्रकार से किया जाता है; जैसे– कभी आमने-सामने बैठकर, कभी टेलीफ़ोन पर एक-दूसरे की बात सुनकर, आजकल कंप्यूटर पर ई-मेल या मोबाइल फ़ोन पर संदेश आदि भेजकर भी वार्तालाप किया जाता है।

उदाहरण–

वाद-विवाद (अंतर्विद्यालयी) प्रतियोगिता में आपके विद्यालय के दोनों छात्र (पक्ष-विपक्ष) विजयी हुए हैं और विद्यालय को 'चल वैजयंती' शील्ड मिली है। इस जीत को लेकर दोनों प्रतिभागियों– 'आस्था एवं दिपाली' के मध्य होने वाले वार्तालाप का वर्णन कीजिए।

आस्था : दिपाली, आज बहुत प्रसन्नता हो रही है। 15 स्कूलों की सहभागिता में हमने 'शील्ड' प्राप्त की है।

दिपाली : हाँ आस्था, मुझे तो सहज विश्वास ही नहीं हो रहा।

आस्था : देखो! यह हमारी अध्यापिका के उचित मार्गदर्शन एवं हम दोनों की मेहनत का परिणाम है। निश्चित तौर पर हमारी प्रधानाचार्या भी बहुत प्रसन्न होंगी। कल समाचार-पत्रों में भी हमारे फोटो के साथ विद्यालय का नाम भी छपेगा। सभी के लिए हर्ष का विषय है।

दिपाली : कल प्रार्थना-सभा में हमारी प्रधानाचार्याजी हम लोगों को पुरस्कृत करेंगी और सभी के सम्मुख उत्साहवर्धन करेंगी।
सच, बहुत गर्व का विषय है।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

1. डॉक्टर और मरीज के बीच होने वाले वार्तालाप को लिखिए।

2. सुबह जल्दी उठने की बात पर होने वाले (माँ-बेटे के मध्य) विवाद को लिखिए।

प्रेरणादायक मूल्य

शब्द संभाले बोलिए, शब्द के हाथ न पाँव,
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव।

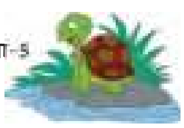

अध्याय 18

पत्र-लेखन
(Letter Writing)

पढ़िए और समझिए

पत्र-लेखन भी एक विद्या है। इसके लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। इसके द्वारा आप अपने परिवार वालों, मित्रों, संबंधियों आदि से विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। पत्र में लेखक और पाठक के मध्य में आत्मीयता और सामीप्य स्थापित होता है। साथ ही हम अपनी समस्याओं के बारे में अनेक अधिकारियों को पत्र द्वारा सूचित कर सकते हैं।

पत्र लिखते समय दी गई महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- पत्र का आरंभ एवं समाप्ति अच्छे ढंग से होनी चाहिए।
- पत्र में संबोधन एवं उचित अभिवादन होना चाहिए।
- पत्र संक्षिप्त तथा स्पष्ट होना चाहिए।
- पत्र की भाषा सरल तथा रोचक होनी चाहिए।
- पत्र लिखने वाले का सही पता तथा तिथि होनी चाहिए।

पत्र के प्रकार

- औपचारिक-पत्र
- अनौपचारिक-पत्र

औपचारिक-पत्र : औपचारिक-पत्र उन व्यक्तियों के लिए लिखे जाते हैं, जिनके साथ व्यक्तिगत संबंध नहीं होते; जैसे– कार्यालयी-पत्र, प्रार्थना-पत्र, व्यावसायिक-पत्र।

अनौपचारिक-पत्र : अनौपचारिक-पत्र उन व्यक्तियों के लिए लिखे जाते हैं जिनके साथ व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंध होते हैं। मित्रों, संबंधियों, परिवार के सदस्यों आदि को लिखे जाने वाले पत्र इसी श्रेणी में आते हैं।

1. औपचारिक-पत्र में–

संबोधन – महोदय / महोदया, श्रीमान्, श्रीमती, मान्यवर, महाशय इत्यादि।

अभिवादन – नहीं होता।

अंत – आज्ञाकारी शिष्य / आज्ञाकारिणी शिष्या, भवदीय / भवदीया, प्रार्थी इत्यादि।

2. अनौपचारिक-पत्र में–

(क) बड़ों के लिए–

संबोधन	–	आदरणीय, पूजनीय इत्यादि।
अभिवादन	–	सादर प्रणाम, चरण स्पर्श इत्यादि।
अंत	–	आपका आज्ञाकारी पुत्र / पुत्री इत्यादि।

(ख) छोटों के लिए–

संबोधन	–	प्रिय, चिरंजीव, आयुष्मान इत्यादि।
अभिवादन	–	शुभाशीर्वाद, सुखी रहो, आशीष इत्यादि।
अंत	–	तुम्हारा शुभचिंतक / भाई / बहन / हितैषी इत्यादि।

(ग) मित्रों के लिए–

संबोधन	–	प्रिय मित्र, प्रिय बंधु इत्यादि।
अभिवादन	–	नमस्कार, नमस्ते इत्यादि।
अंत	–	तुम्हारा / आपका मित्र इत्यादि।

आओ, पत्र के कुछ उदाहरण देखें–

औपचारिक-पत्र

प्रधानाचार्या को बस बदलवाने के लिए प्रार्थना-पत्र।

सेवा में,
15 जुलाई, 20.....
प्रधानाचार्या
रोज़वुड पब्लिक स्कूल
लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली–110092
विषय : बस बदलने हेतु पत्र।
महोदया,

हम इन गर्मियों की छुट्टियों में अपना घर बदल रहे हैं। पहले मैं पी.वी. 4 रूट में जाता था, परंतु अब नारायणा विहार जाने के लिए मुझे पी.वी. 7 लेनी होगी। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मुझे बस बदलने की अनुमति प्रदान की जाए। ताकि विद्यालय आने में मुझे किसी प्रकार की परेशानी न हो।

भवदीय
दिनेश

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पत्र-लेखन का अभ्यास करवाएँ एवं उसमें सम्मिलित होने वाले विषयों के सार को भी बताएँ।

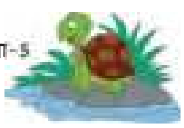

अनौपचारिक पत्र

गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने के लिए मित्र को निमंत्रण-पत्र।

45, कमल निवास, फरीदाबाद।

28 मई, 20......

D-50, तिलक नगर, नई दिल्ली

दिनांक – 25 मई, 2016

प्रिय मित्र गौरव,

नमस्कार!

मुझे आशा है कि तुम्हारी गर्मियों की छुट्टियाँ शीघ्र ही शुरू होने वाली होंगी। तुमने इस वर्ष गर्मियों की छुट्टियाँ मेरे साथ बिताने का वायदा किया था। मेरे मामा जी ने मुझे नैनीताल बुलाया है। जब मैंने तुम्हारे आने की बात बताई तो वे बहुत प्रसन्न हुए। वहाँ मौसम बहुत अच्छा चल रहा है। पत्र द्वारा मेरे पास पहुँचने की तारीख शीघ्र लिखना ताकि यात्रा की उचित व्यवस्था शीघ्र-से-शीघ्र की जा सके।

पिता जी तथा माता जी को मेरी तरफ से चरण स्पर्श कहना।

तुम्हारा मित्र

रोहित

आइए, पुनरावृति करें

- पत्र से संदेशों का आदान-प्रदान होता है।
- पत्र दो प्रकार के होते हैं– अनौपचारिक तथा औपचारिक पत्र।
- पत्र-लेखन से शब्दों के चयन में बढ़ोत्तरी होती है।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

1. अंतर्विद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता जो कि 'रोटरी क्लब' द्वारा आयोजित की जा रही है, सूचना देते हुए तथा भाग लेने की अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।
2. पिता जी को पत्र लिखकर 2000 रुपए भेजने का अनुरोध कीजिए। वार्षिकोत्सव में आपको गणपति की भूमिका निभाने हेतु परिधान की आवश्यकता है, अतः विद्यालय में जमा कराने हैं।

प्रेरणादायक मूल्य

दूसरों के लिए गड्ढ़ा खोदने से अच्छा है, खुद की राह बना लें।

अध्याय 19

अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph Writing)

पढ़िए और समझिए

किसी विषय के भाव अथवा विचार पर कुछ पंक्तियों में अपने विचार व्यक्त करना अनुच्छेद-लेखन कहलाता है। अनुच्छेद के अंतर्गत केवल एक विषय पर ही संक्षेप एवं प्रभावपूर्ण तरीके से भाव व्यक्त किए जाते हैं।

अनुच्छेद लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें–

- पहले विषय के संबंध में अच्छी तरह विचार करना आवश्यक है।
- भावों की अभिव्यक्ति क्रमवार होनी चाहिए।
- भाषा शुद्ध एवं स्पष्ट तथा सरल होनी ज़रूरी है।
- अधिकतम 10 पंक्तियों में अपनी बात को समाप्त कर देना चाहिए।

1. खेलों का महत्व

हमारे जीवन में खेलों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। थके दिमाग और शरीर को आराम देने के लिए खेल सर्वोत्तम माध्यम हैं। खिलाड़ी खेलते समय अपनी सारी चिंताएँ भूल जाता है। खेल से शारीरिक और मानसिक विकास होता है। आजकल खेल के क्षेत्र में लोग अपना भविष्य सँवारने लगे हैं। खेल के मैदान में व्यक्ति आपसी सहयोग करना तो सीखता ही है, मित्रता का भाव भी उत्पन्न होता है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को अनुच्छेद-लेखन हेतु उचित जानकारी दें तथा प्रमुख बिंदुओं से अवगत कराएँ।

2. मेरा पुस्तकालय

पुस्तकालय अर्थात् 'पुस्तकों का घर'। प्रत्येक विद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में एक पुस्तकालय अवश्य होता है। कई जगह सार्वजनिक पुस्तकालय भी होते हैं। जहाँ बैठकर हम शांतिपूर्वक अपनी मनपसंद विषय की पुस्तकें पढ़ सकते हैं। मेरे विद्यालय में भी एक बड़ा और सुव्यवस्थित पुस्तकालय है। जहाँ हर विषय से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं। हम सब बच्चे पुस्तकालय का भरपूर लाभ उठाते हैं।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए विषयों पर अनुच्छेद लिखिए।**

मेरा प्रिय मित्र

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

वृक्ष लगाओ, भूमि बचाओ

ऑनलाइन कक्षा

प्रेरणादायक मूल्य

दुनिया को सकारात्मक नजरिये से देखने का मतलब है, अपना नजरिया सुधारना, इससे वैचारिक शुद्धता आती है।

निबंध-लेखन
(Essay Writing)

पढ़िए और समझिए

निबंध-लेखन गद्य लेखन की एक महत्वपूर्ण विधा है। निबंध लेखन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

निबंध का अर्थ होता है–'बँधा हुआ' अर्थात् किसी विषय को क्रमबद्ध रूप में जब लिखा जाता है और निर्धारित शब्द सीमा में विचार अभिव्यक्त किए जाते हैं, तब वह निबंध कहलाता है।

निबंध के विभिन्न अंग-

1. **प्रारंभ/प्रस्तावना :** इसके अंतर्गत विषय से संबंधित प्रारंभिक जानकारी दी जाती है।
2. **विषय-वस्तु :** इसमें मूल विषय पर दो या तीन अवतरणों में विचार व्यक्त किए जाते हैं।
3. **उपसंहार (समाप्ति):** एक अनुच्छेद में निबंध को समाप्ति की ओर ले जाते हैं और अंत तक आते-आते अपने विचारों को विराम दिया जाता है।

निबंध के प्रकार- मूलत: निबंध तीन प्रकार के होते हैं–

1. वर्णनात्मक निबंध- किसी वस्तु, स्थान, मेले, प्राकृतिक दृश्य, यात्रा आदि का वर्णन।
2. विचार प्रधान निबंध- धर्म, राजनीति, ज्ञान, दर्शन आदि समस्याओं संबंधी।
3. भाव प्रधान निबंध- इस प्रकार के निबंधों में भावों की प्रधानता रहती है, अहिंसा, संस्कार, आतंकवाद, मानवता आदि विषयों की चर्चा की जाती है।

निबंध लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें–

- निबंध को चार अथवा पाँच अनुच्छेदों में विभक्त करके लिखना चाहिए।
- उचित एवं विषयानुरूप मुहावरे व लोकोक्तियों का प्रयोग करना अच्छा रहता है।
- विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए।
- निबंध में रूपरेखा से भटकना नहीं चाहिए।

आइए, कुछ उदाहरण देखें–

हमारे राष्ट्रीय त्योहार

भारतवर्ष विभिन्न संस्कृतियों का देश है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के धार्मिक एवं राजनैतिक त्योहार मनाए जाते हैं। राष्ट्रीय त्योहारों से तात्पर्य उन त्योहारों से है, जो राष्ट्र की किसी विशेष गतिविधि को स्मरण करने हेतु मनाया जाता है।

उत्सव मनाना मानव का जन्मजात गुण है। अपने इस गुण को मानव त्योहार मनाकर पूर्ण करता है। पर्व एवं त्योहार किसी भी देश की जीवंतता के परिचायक होते हैं, जो त्योहार पूरा राष्ट्र मिलकर मनाता है, वे त्योहार राष्ट्रीय त्योहार कहलाते हैं।

हमारे राष्ट्रीय त्योहार गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस एवं गांधी जयंती हैं। गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। राष्ट्रपति भवन के बाहर राजपथ पर राष्ट्रपति द्वारा तीनों सेनाओं से सलामी लेना, परेड, विभिन्न झाँकियाँ, रात्रि को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि इस पर्व की विशेषताएँ हैं।

स्वतंत्रता दिवस '15 अगस्त, 1947' को हमारा देश स्वतंत्र हुआ था और इसकी याद में यह पर्व प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रध्वज फहराना, सलामी लेना तथा देश को संबोधित करना इस पर्व की विशेषताएँ हैं।

इस प्रकार 2 अक्टूबर महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्मदिवस है। यह दिवस इनको श्रद्धांजलि देने के रूप में मनाया जाता है। अत: ये सभी पर्व हमारे लिए अत्यंत विशेष महत्व रखते हैं।

राष्ट्रीय त्योहारों का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और आंतरिक आनंद का भाव उजागर करना है तथा यह भी स्मरण रखना है कि मानवता और राष्ट्रीयता देशवासियों के लिए सबसे बड़ी चीज़ है। इसकी रक्षा करना प्रत्येक देशवासी का पुनीत कर्तव्य है।

बढ़ती जनसंख्या

भारत आज़ादी के इतने दिनों बाद भी अनेक समस्याओं से ग्रसित है। इनमें से एक मुख्य समस्या है 'जनसंख्या की समस्या'। गरीबी, बेरोजगारी, घटती सुविधाएँ, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याएँ इसी से जुड़ी हैं। नैतिक पतन, चारित्रिक पतन इत्यादि के मूल में भी यही समस्या है। भारतवर्ष की अनेक रूढ़िवादी मान्यताएँ, अशिक्षा, भाग्यवादी दृष्टिकोण इत्यादि इस समस्या को निरंतर बढ़ावा देती हैं।

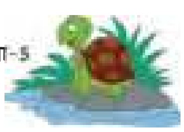

सच है कि सरकार द्वारा इस संबंध में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। परंतु भारत की जनता में अभी भी जागरूकता की कमी है।

हमें स्वीकारना होगा कि यह केवल सरकार का ही नहीं, समस्त भारतीय जनता का उत्तरदायित्व है कि जागरूक होकर इस समस्या का समाधान तलाश करें।

हमारा राष्ट्रीय झंडा

संकेत : ✦ भूमिका ✦ राष्ट्रीय ध्वज का महत्व ✦ विशेषता ✦ उपसंहार।

किसी भी देश को विशिष्ट पहचान देता है उसका झंडा। यह देश की आज़ादी व संप्रभुता तथा गर्व का सूचक होता है। 15 अगस्त, 1947 को भारत दासता से मुक्त हुआ। भारत ने अपने तिरंगे-झंडे के रूप में भारतीय लोगों को अपनी पहचान प्रदान की। हमारा राष्ट्रीय ध्वज है तिरंगा, जो हमारा मान है, सम्मान है तथा भारतीय लोगों को इस पर गर्व है। इसे लहराते हुए देखकर प्रत्येक भारतीय नागरिक का हृदय राष्ट्र के लिए गर्व व प्रेम-भाव से खिल उठता है।

राष्ट्रीय ध्वज का इतिहास बहुत लंबा और रोचक है। इस पर सुंदर गीत लिखे गए। इसी की छत्रछाया में स्वतंत्रता सेनानियों ने आज़ादी की जंग लड़ी। तिरंगे के मान, सम्मान को बनाए रखने के लिए उन्होंने अपने प्राणों के बलिदान दिए। राष्ट्रीय ध्वज से उन्हें त्याग और कठिन परिश्रम की प्रेरणा मिली। यह तिरंगा ही भारत की विभिन्न जातियों को राष्ट्रीयता के सूत्र में बाँधता है।

सबसे पहले इसके मध्य भाग में चरखा था। कई परिवर्तनों के पश्चात् अंत में इसके मध्य में अशोक-चक्र को स्थान दिया गया । यह चक्र न्याय तथा शांति का प्रतीक है। यह चक्र गहरे नीले रंग का है तथा इसमें 24 तीलियाँ हैं। यह हमें अपने कर्तव्य और धर्म की याद दिलाती हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में छात्रों को उचित और उपयुक्त शीर्षक के माध्यम से निबंध-लेखन शैली के तरीके को समझाएँ।

राष्ट्रीय ध्वज में 3:2 के अनुपात में लंबाई व चौड़ाई की तीन समानांतर पट्टियाँ होती हैं। तीनों पट्टियाँ अलग-अलग रंगों की होने के कारण इसे तिरंगा कहा जाता है। यह आकार में आयताकार होती हैं। सबसे ऊपर वाली केसरिया पट्टी त्याग की भावना व साहस का प्रतीक है। मध्य की सफ़ेद पट्टी शांति की भावना तथा ईमानदारी का और नीचे की हरे रंग की पट्टी हरियाली तथा समृद्धि का प्रतीक है।

राष्ट्रध्वज का अपमान प्रत्येक भारतवासी का अपमान है और यह दंडनीय अपराध भी है। राष्ट्रीय शोक की स्थिति में इसे आधा नीचे कर दिया जाता है। 15 अगस्त और 26 जनवरी को इसे मुख्य इमारतों पर फहराया जाता है।

आइए, पुनरावृति करें

- निबंध लेखन गद्य विधाओं में से महत्वपूर्ण विधा है।
- निबंध का अर्थ बंधा हुआ अर्थात् किसी विषय को क्रमबद्ध एवं निर्धारित शब्द-सीमा में विचार अभिव्यक्ति है।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

दिए गए विषयों पर निबंध लिखिए।

(क) **ऋतुराज बसंत**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

(ख)

मेरी पहली रेल यात्रा

(ग) समय का सदुपयोग

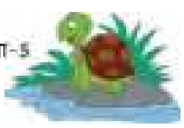

(घ) **परिश्रम का महत्व**

प्रेरणादायक मूल्य

समय सभी का आता है, इसलिए अच्छे समय का इंतज़ार करना चाहिए। धैर्य नहीं खोना चाहिए।

अध्याय 21

कहानी–लेखन
(Story-Writing)

पढ़िए और समझिए

बचपन में दादी, नानी या माँ से कहानी सुनना प्रत्येक बच्चे का शौक होता है परंतु धीरे–धीरे जब बच्चा बड़ा होने लगता है तो उसे कहानी पढ़ना, लिखना व सुनना भी विशेष प्रिय लगता है। बच्चे विभिन्न चित्रों व स्थितियों को ध्यान में रखकर नई–नई कल्पनाएँ कर उन्हें कहानियों का रूप देते हैं। धीरे–धीरे निरंतर अभ्यास से उनमें लेखन–क्षमता का पूर्ण विकास हो जाता है परंतु कहानी लिखते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

1. कहानी शिक्षाप्रद होनी चाहिए।
2. कहानी का उद्देश्य बच्चों के अनुकूल रहना आवश्यक है।
3. कहानी के वाक्य छोटे तथा सरल होने चाहिए।
4. कहानी का आरंभ रोचक रहना चाहिए ताकि उसे पढ़ते ही पूरी कहानी पढ़ने के लिए रुचि जाग जाए।

1. मक्कारी की सज़ा

एक समय की बात है कि एक चीनी का व्यापारी था। वह व्यापारी प्राय: गधे पर चीनी लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाता और ले जाता था। रास्ते में एक नदी थी। एक दिन की बात है गधा थका हुआ था। उस पर उस दिन भार कुछ ज्यादा था। नदी पार करते समय गधे का पैर फिसल गया। कुछ समय तक चीनी की बोरियाँ पानी में पड़ी रहीं। गधे को पानी से बाहर निकालकर जब उस पर पुन: चीनी लादी गई तो उसका भार कम था। गधा बड़ा प्रसन्न हुआ। अब गधा प्रत्येक दिन उसी प्रकार नदी में गिरने लगा। इससे मालिक बड़ा परेशान हुआ।

एक दिन उसने अपने सभी मित्रों एवं संगी-साथियों से परामर्श लिया। उसके साथी गधे की चाल समझ गए। उन्होंने उपाय बताया कि क्यों न गधे को एक बार सीधा किया जाए और उस पर चीनी के स्थान पर फोम के गट्ठर लाद दिए जाएँ। अब गधे पर फोम लाद दी गई। इस बार फोम का भार कम था। गधा मन-ही-मन बड़ा प्रसन्न था लेकिन प्रत्येक दिन की तरह गधा जब नदी पार करने लगा तो नदी में गिर गया। आज उसे वैसे ही पड़ा रहने दिया गया ताकि फोम अच्छी तरह पानी सोख ले और उसका वजन बढ़ जाए।

बहुत देर तक पानी में रहने के बाद गधे को ठंड लगी। विवश होकर वह स्वयं पानी से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा लेकिन अब उसका भार बहुत बढ़ चुका था। गधा उठना तो चाहता था पर उठ न सका। व्यापारी को भी उसे पानी से बाहर लाने में कठिनाई हुई। अंत में किसी चलते राही की सहायता से वह गधे को पानी से बाहर निकाल पाया।

गधे ने महसूस किया कि उसका भार हल्का होने के स्थान पर बहुत ज़्यादा भारी है। उसे चलने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और ऊपर से भार। गधा जैसे-तैसे घर पहुँचा और इसके बाद गधा कभी भी पानी में नहीं गिरा।

शिक्षा – हमें दूसरों के साथ कपट नहीं करना चाहिए।

2. पुजारी की चालाकी

रामगढ़ में एक बहुत प्राचीन मंदिर था। बहुत से भक्त वहाँ दूर-दूर से दर्शनों के लिए आते थे। उस मंदिर की विशेषता यह थी कि सभी लोग वहाँ शाम को कुछ खास पकवान बनाकर ले जाते थे। सभी पकवान भगवान के सामने रख दिए जाते थे। जिस भक्त के पकवान से भगवान भोग लगा लेते थे वह भक्त स्वयं को विशेष धन्य समझता था। पकवान भगवान के सामने मंदिर में रखने के बाद मंदिर के अंदर कोई नहीं आ-जा सकता था। मंदिर का पुजारी मंदिर को बाहर से ताला लगा देता था। जब सुबह मंदिर के पट खोले जाते तो वहाँ पर अधिकतर पकवान समाप्त पाते थे। भक्त लोग इस बात से बेहद प्रसन्न होते थे कि भगवान ने उनके द्वारा बनाए गए पकवान का भोग लगाया। उस राज्य के अधिकारियों को यह बात विशेष बुरी लगी। उन्हें मंदिर के पुजारी पर शक होने लगा। उन्होंने वास्तविकता का पता लगाने की सोची। एक दिन जब वह मंदिर में दर्शन के लिए गए तो उन्होंने मूर्ति के आस-पास राख बिखेर दी। अब वह अगले दिन का बेसब्री से इंतज़ार

करने लगे। अगले दिन जब वह राजा को लेकर मंदिर पर पहुँचे तो राख पर छपे पैरों के चिह्न साफ़ दिखाई दे रहे थे। अधिकारी सारी बात समझ गए। उन्होंने राजा को अवगत कराया कि पुजारी ही उन पकवानों का भोग लगाता है। मूर्ति के पीछे से यदि पत्थर हटाया जाए तो वह रास्ता सीधे पुजारी के घर की तरफ जाता है, यह सब पुजारी की ही चाल थी। वह भगवान के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगता था। अपनी पोल खुलते ही पुजारी के चेहरे का रंग फीका पड़ गया। पुजारी ने अपनी गलती के लिए सबसे क्षमा माँगी व भविष्य में ऐसी भूल का मौका अब नहीं आने दूँगा, यह वचन दिया।

शिक्षा– अंध-विश्वासों से दूर रहें।

3. सज़ा मिली

जीतू नारायणा गाँव में रहता था। वह कक्षा छः में पढ़ता था। उसके मामा जी थोड़ी दूर मायापुरी चौक में रहते थे। मायापुरी के पास एक जंगल था। जीतू को मामा जी के साथ वन में घूमना बहुत अच्छा लगता था। वह मामा जी के लड़के मीतू के साथ खेलता था। दोनों पूरे गाँव में घूमते-फिरते थे।

मार्च का महीना आया। जीतू की परीक्षाएँ शुरू हो गईं। एक दिन मामा जी का पत्र आया। मामा जी ने छुट्टियों में जीतू को नारायणा आने के लिए कहा। जीतू के पिताजी ने भी 'हाँ' कह दिया। एक दिन पिता जी ने उसे बस में बैठा दिया। बस नारायणा पहुँची। बस स्टॉप पर मामा जी और मीतू उसे लेने आए थे। वह बहुत खुश था। मामी जी ने उसे प्यार से खाना खिलाया।

दूसरे दिन मामा जी कार्यालय जा रहे थे। उन्होंने जीतू से कहा–"तुम अकेले बाहर कहीं मत जाना। जब भी जाना हो मीतू के साथ बाहर जाना। यहाँ जंगल है। जंगल में बहुत खतरनाक जानवर हैं। और हाँ, दक्षिण दिशा में बिल्कुल मत जाना।" यह कहकर मामा जी कार्यालय चले गए। दोपहर हो गई। मीतू सो रहा था। जीतू बाहर निकला। उसने सोचा–"दक्षिण दिशा में अवश्य विशेष बात है। आखिर मामा जी वहाँ जाने के लिए मना क्यों कर रहे थे?" वह दक्षिण दिशा की ओर चल दिया।

कुछ दूरी पर एक जगह जमीन नरम थी। उसने एक कदम रखा तो उसका पैर धँस गया। धीरे-धीरे उसका शरीर ज़मीन में धँसता जा रहा था। वहाँ दलदल था वह दलदल से बाहर निकलने का जितना प्रयत्न करता, उतना ही अंदर धँसता जाता।

उसे बहुत डर लगने लगा। वह विशेष जोर से चिल्लाया। सौभाग्य से पास में ही तीन-चार लोग थे। उनके हाथ में बाँस था। उन्होंने दलदल में बाँस डाला और धीरे से जीतू को निकाल लिया।

रात को मामा जी ने उसे बहुत डाँटा। "जब मैंने मना किया था। फिर तुम वहाँ क्यों गए थे?" जीतू ने माफी माँगी और कहा—"मैं आगे से कभी बड़ों की बात की उपेक्षा नहीं करूँगा।"

शिक्षा : हमें सदैव बड़ों की बात सुनकर उस पर अमल करना चाहिए।

4. कुसंगति का फल

एक बार प्रगति नाम की एक लड़की बुरी संगति में फँस गई। वह बात-बात पर लड़ाई-झगड़ा करती, झूठ बोलती, आवारा लड़कियों के साथ-साथ घूमती रहती। बेटी के इस दुर्व्यवहार से अब उसके माता-पिता बड़े तंग आ चुके थे।

एक दिन प्रगति के पिता जी को एक विशेष उपाय सूझा। वे बाजार से अपनी बेटी के सामने ताज़े फल खरीदकर लाए। इसके अतिरिक्त उन फलों में एक गला-सड़ा फल भी था। उन्होंने अपनी बेटी से उन्हें एक टोकरी में रखवा दिया।

तीन-चार दिन समाप्त हो जाने पर पिताजी ने अपनी बेटी से कहा-ज़रा उन फलों को ले आओ जो तुमने टोकरी में सँभालकर रखे थे। बेटी तुरंत टोकरी ले आई लेकिन जैसे ही टोकरी सामने खोली तो देखा कि सब फल सड़ चुके थे। तब पिता जी ने बेटी से कहा- "कुछ दिन पहले तो सब फल ताज़ा थे, एक ही फल सड़ा हुआ था किंतु आज सब सड़ चुके हैं। बेटी ! यह सब संगति का फल होता है। एक सड़े हुए फल के कारण सारे फल गल-सड़ गए। इसी प्रकार बुरी लड़कियों की संगति में रहकर कई अच्छी बच्चियाँ भी बुरी बन जाती हैं। तब से प्रगति ने निश्चय कर लिया कि वह भविष्य में किसी भी बुरी लड़की की संगत में नहीं रहेगी और इस प्रकार धीरे-धीरे वह एक अच्छी लड़की बन गई।

शिक्षा – बुरी संगत से अकेला भला।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कहानी लेखन के बारे में बताएँ तथा उन्हें लेखन के माध्यम से अभ्यास कराएँ।

आइए, पुनरावृति करें

- कहानी से केवल मनोरंजन नहीं बल्कि शिक्षा भी मिलती है।
- कहानी-लेखन से पूर्व संक्षिप्त शीर्षक पर विचार करना आवश्यक होता है।
- कहानी रोचक ढंग से प्रारंभ होनी चाहिए।
- घटनाओं का क्रम उचित प्रकार से संयोजित करना चाहिए।
- कहानी सदैव भूतकाल में लिखी जानी चाहिए।
- अंत में कहानी की शिक्षा अवश्य लिखनी चाहिए।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर कहानी की रचना कीजिए।

संकेत- एक हाथी राजा – बहुत दुष्ट और अत्याचारी, जानवरों को रौंदता था, सूँड़ नहीं थी केवल लंबी नाक थी। शेर और हाथी की लड़ाई – शेर के साथ सारा जंगल था – शेर ने हाथी की नाक मुँह में पकड़ ली, हाथी और शेर की खींचातानी में – हाथी की नाक सूँड़ में बदल गई, तब से हाथी डरकर भाग गया और शेर जंगल का राजा बन गया। हाथी को सूँड़ के फायदे नज़र आए – उसने अन्य हाथियों की नाक भी खींचकर सूँड़ में बदल डाली – तब से ही हाथियों की सूँड़ होती है।

2. **दिए गए विषय को आधार मान कर एक रोचक कहानी की रचना कीजिए।**

(क) मिल-जुल कर रहना

(ख) एकता में बल

(ग) जैसी करनी वैसी भरनी

3. **दिए गए चित्र के आधार पर कहानी लिखिए।**

प्रेरणादायक मूल्य

लेखन के माध्यम से शैली को बढ़ाने से मानवता कौशल में वृद्धि होती है।

अध्याय 22

चित्र-वर्णन
(Picture Description)

पढ़िए और समझिए

किसी चित्र को ध्यान से देखकर, मन में उठने वाले विचारों को जब लेखनीबद्ध किया जाता है, तब वह चित्र-वर्णन कहलाता है। वास्तव में चित्र-वर्णन बच्चों की कल्पना शक्ति को विकसित करने में मदद करता है तथा बच्चों के पास शब्दों का संग्रह भी होता चलता है। छात्र शब्दों और भावनाओं के मेल से विचार व्यक्त करना सीखते हैं।

दिए गए चित्र-वर्णन को देखिए–

यह एक मेले का दृश्य है। जिसमें बड़-बड़े झूले लगे हुए हैं। कुछ बच्चे झूला झूल रहे हैं। एक बच्चा अपनी माँ के साथ मेला देखने आया है। मेले में गुब्बारे वाले से बच्चा गुब्बारे खरीद रहा है। कुछ बच्चे आसमान में पतंग उड़ा रहे हैं। मेले में तरह-तरह की दुकानें सजी हुई हैं। कुछ बच्चे आइसक्रीम का आनंद ले रहे हैं। संध्या के समय सूरज अस्त हो रहा है। आसमान में पक्षी उड़ रहे हैं।

यह एक पार्क का दृश्य है। यहाँ चारों ओर हरियाली छायी हुई है तथा सुंदर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। कुछ बच्चे झूला झूल रहे हैं। एक लड़का अपने पालतू जानवर के साथ खेल रहा है। चारों ओर सुखद वातावरण बना हुआ है।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

दिए गए चित्रों के आधार पर वर्णन कीजिए।

1. लोमड़ी और अंगूर

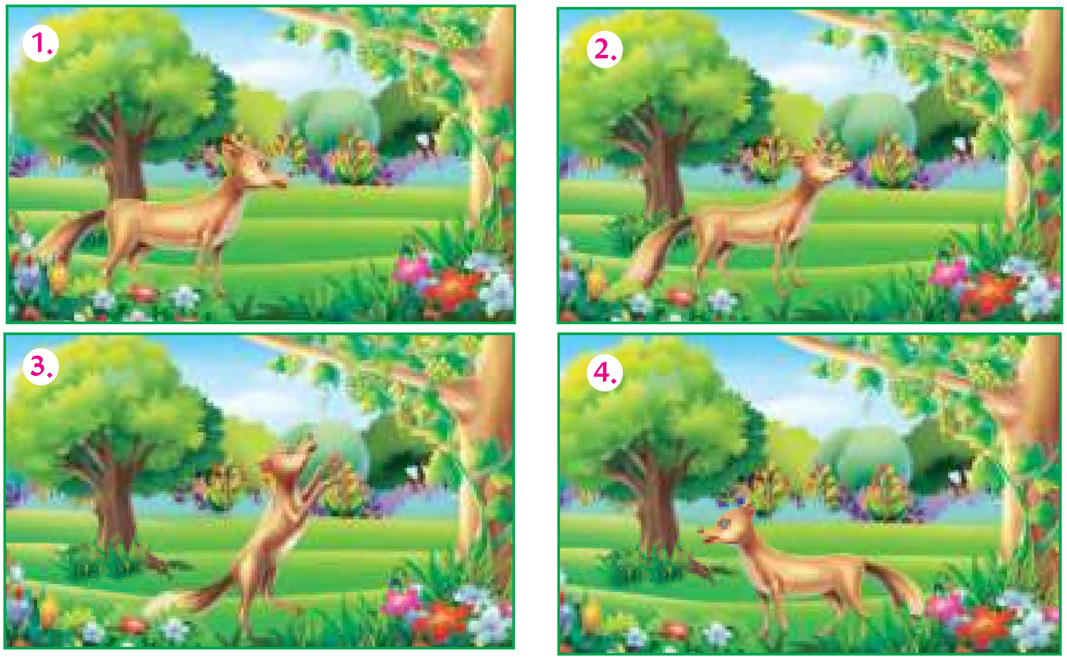

2. श्रेष्ठ मित्रता

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार चित्र के माधयम से कहानी लिखते हैं, ठीक उसी प्रकार हम अपने कार्यों के द्वारा अपने जीवन की कहानी लिखते हैं।

स्वमूल्यांकन पत्र-1

समयः 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वर्णमाला से आप क्या समझते हैं? हिंदी वर्णमाला में वर्णों की संख्या बताइए।

(ख) तत्सम एवं तद्भव शब्दों का अर्थ समझाइए।

(ग) कारक किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(घ) क्रिया की परिभाषा और उसके भेद बताइए।

(ङ) वाक्य से क्या तात्पर्य है? इसके कितने अंग होते हैं?

2. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भाष् धातु का अर्थ है, लिखना। ☐

(ख) नींद शब्द में अनुस्वार का प्रयोग हुआ है। ☐

(ग) शब्दों के सार्थक मेल से अवतरण बनता है। ☐

(घ) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं। ☐

(ङ) हस्ताक्षर और प्राण शब्द एकवचन और बहुवचन में एकसमान रहते हैं। ☐

(च) कारक चिह्नों को परसर्ग भी कहते हैं। ☐

(छ) हमारी राजभाषा हिंदी है। ☐

(ज) साफ हवा गुणवाचक विशेषण है। ☐

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) भाषा को लिखने के लिए निर्धारित चिह्न .... कहलाते हैं।

(ख) हिंदी भाषा में .... स्वर और .... मूल व्यंजन होते हैं।

(ग) अर्थ के आधार पर शब्दों के दो रूप .... और .... होते हैं।

(घ) एक से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द .... कहलाते हैं।

(ङ) कुछ सर्वनाम शब्द .... में समान रहते हैं।

4. **दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।**

(क) भारत का प्राचीन नाम आर्यावर्त था।

(ख) आज कक्षा में तीन विद्यार्थी अनुपस्थित हैं।

(ग) दाल में कुछ गिर गया है।

(घ) उपवन में दूब घास लगी है।

5. **दिए गए वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय छाँटिए।**

(क) मनीष बिस्कुट बेच रहा है। ....

(ख) चपरासी रजिस्टर ला रहा है। ....

(ग) नौकर कार धो रहा है। ....

(घ) कृषक फसल काट रहा है। ....

6. **दिए गए वाक्यों को सर्वनाम शब्दों से पूरा कीजिए।**

(क) .... पुस्तक पढ़ रहा है। (ख) वह कमीज़ .... है।

(ग) .... पत्र फाड़ दिया। (घ) .... मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते।

7. **दिए गए वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँटिए।**

(क) ताजमहल शानदार इमारत बहुत सुंदर है।

(ख) हिमालय पर बर्फ़ जमी है।

(ग) सच्चाई एक अच्छा गुण है।

(घ) सोना बहुत महँगी धातु है।

(ङ) गंगा एक पवित्र नदी है।

8. **दिए गए शब्दों का अंतर स्पष्ट कीजिए।**

(क) विकारी शब्द एवं अविकारी शब्द

(ख) तत्सम शब्द और तद्भव शब्द

9. **विकारी शब्दों के चारों भेदों के नाम लिखिए।**

10. **अविकारी शब्द कितने होते हैं? नाम बताइए।**

स्वमूल्यांकन पत्र-2

समय: 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) 'श्रुतिसम-भिन्नार्थक' का अर्थ समझाइए।

(ख) 'अनेकार्थी' शब्द किन्हें कहते हैं?

(ग) 'विराम-चिह्न' का क्या अर्थ है? विराम-चिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

(घ) 'अपठित गद्यांश' का अर्थ बताइए।

2. दिए गए शब्दों से इस प्रकार वाक्य बनाइए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

(क) समान ....

सामान ....

(ख) दिन ....

दीन ....

(ग) स्त्री ....

इस्त्री ....

(घ) आदि ....

आदी ....

(ङ) राज ....

राज़ ....

3. दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।

(क) उत्तर – ....

(ख) फल – ....

(ग) वर – ....

(घ) तीर – ....

(ङ) आँख – ....

4. दिए गए वाक्यों में सही जगह पर विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।

(क) गांधी जी ने कहा करो या या मरो

(ख) संजय तुम कहाँ जा रहे हो

(ग) काम करते रहना ही जीवन है आलस्य तो रोग है

(घ) अरे यह क्या हो गया

(ङ) छि: छि: कितनी मक्खियाँ भिनक रही हैं

5. दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) ईद का चाँद ....

(ख) अंधे की लाठी ....

(ग) एक अनार सौ बीमार ....

(घ) कलई खुलना ....

(ङ) अक्ल का दुश्मन ....

6. वर्तनी शुद्ध कीजिए।

(क) वायू ....

(ख) दिपावली ....

(ग) परिश्रमिक ....

(घ) अध्य्यन ....

(ङ) आर्शीवाद ....

(च) खुशबु ....

7. दिए गए क्रियाकलापों पर संवाद तैयार कीजिए।

(क) कोच और खिलाड़ी के मध्य बातचीत।

(ख) ग्राहक और बैंक मैनेजर के बीच हुई वार्तालाप।

(ग) किसान और जमींदार के बीच हुई वार्तालाप।

8. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए।

(क) व्यायाम का महत्व

(ख) हमारे राष्ट्रीय त्योहार

9. अपने दादा जी को पत्र लिखकर अपने परीक्षाफल से अवगत करवाइए।

अथवा

दो दिन के अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।